Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 15

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

5 शअबान 1440 हिजरी कमरी 11 शहादत 1397 हिजरी शमसी 11 अप्रैल 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मुत्तकी की शान में आया है وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ (अल्बकरह 4)अर्थात वह नमाज़ को खड़ी करता है।

जब उसने अल्लाहो अकबर कहा तो एक हुजूम शंकाओं की है जो उस के हुज़ूर दिल में अन्तर डाल रही है वह उनसे कहीं का कहीं पहुंच जाता है। बार-बार اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ कह कर नमाज़ के क़ायम करने के लिए दुआ मांगता है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ईमान बिलग़ैब

तक्वा जैसा कि मैं वर्णन कर आया हूं कि कुछ तकल्लुफ को चाहता है इसी लिए फरमाया कि هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ (अल्बकरह: 3,4) इस में एक तकुल्लुफ है देखने के मुकाबला में ईमान लाना कुछ तकल्लुफ को चाहता है अत: मुत्तकी के लिए एक सीमा तक तकल्लुफ है क्योंकि जब वह सालेह का स्तर प्राप्त करता है तो फिर ग़ैब उस के लिए ग़ैब नहीं रहता क्योंकि सालेह के अन्दर से एक नहर खुलती है जो इस के अन्दर से निकल कर ख़ुदा तक पहुंचती है और ख़ुदा उस की मुहब्बत को अपनी आंख से देखता है कि مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖۤ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى

(बनी इस्राईल 73)

इसी से ज़ाहिर है कि जब तक इन्सान पूरी रोशनी इसी दुनिया में ना हासिल कर ले वह कभी ख़ुदा का मुँह ना देखेगा। अत: मुत्तक़ी का यही काम है कि वह हमेशा ऐसे सुरमे तैयार करता रहे जिस से उस का रुहानी नुज़ूलुल मा (एक बीमारी का नाम है) दूर हो जाए। अब इस से ज़ाहिर है कि मुत्तक़ी शुरू में अंधा होता है। विभिन्न कोशिशों और तज़क्कियों से वह नूर हासिल करता है। अत: जब सूजाखा हो गया और सालिह बन गया फिर ईमान बिलग़ैब ना रहा और तकल्लुफ़ भी ख़त्म हो गया। जैसे कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी आंख़ों से इसी दुनिया में बहिश्त तथा दोज़ख़ इत्यादि सब कुछ दिखाया गया। जो मुत्तक़ी को एक ईमान बिलग़ैब के रंग में मानना पड़ता है वे तमाम आप ने देख लिया। इस आयत में इशारा है कि मुत्तक़ी यद्यपि अंधा है और तकल्लुफ़ की तकलीफ़ में है लेकिन सालेह एक दारुल अमान में आ गया है और इस का नफ़स नफ़से मुतमइन्ना हो गया है। मुत्तक़ी अपने अंदर ईमान बिलग़ैब की कैफ़ीयत रखता है। वह अंधा धुंद तरीक़ से चलता है। इस को कुछ ख़बर नहीं। हर एक बात पर इस का ईमान बिलग़ैब है यही उस की सच्चाई है और इस सिदक़ के मुक़ाबिल ख़ुदा ताला का वादा है कि वे फ़लाह (सफलता) को पाएगा اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (अल्बकरह 6)

इक़ामिस्सलात

इस के बाद मुत्तकी की शान में आया है وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ (अल्बकरह 4)अर्थात वह नमाज़ को खड़ी करता है। यहां शब्द खड़ी करने का आया है यह भी इस तकल्लुफ़ की तरफ़ इशारा करता है जो मुत्तक़ी का गुण है अर्थात जब वह नमाज़ शुरू करता है तो तरह तरह की शंकाओं का उसे मुक़ाबला होता है जिन के कारण उस की नमाज़ मानो बार-बार गिरी पड़ती है जिस को उसने खड़ा करना है। जब उसने अल्लाहो अकबर कहा तो एक हुजूम शंकाओं की है जो उस के हुज़ूर दिल में अन्तर डाल रही है वह उनसे कहीं का कहीं पहुंच जाता है। परेशान होता है। यहां तक कि अल्लाह के समक्ष खड़े होने के आन्नद को प्राप्त करने के लिए लड़ता मरता है लेकिन नमाज़ जो गिरी पड़ती है बड़ी जान को खतरे में डाल कर उसे खड़ा करने की फ़िक्र में है। बार-बार اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ कह कर नमाज़ के क़ायम करने के लिए दुआ मांगता है और ऐसे الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की हिदायत चाहता है जिससे उस की नमाज़ खड़ी हो जाए। इन शंकाओं के मुक़ाबला में मुत्तक़ी एक बच्चा की तरह है जो ख़ुदा के आगे गिड़गिड़ाता है रोता है और कहता है कि मैं اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ (अल्आराफ 177) हो रहा हूं अत: यह वही जंग है जो मुत्तकी को नमाज़ में नफ्स के साथ करनी होती है और इसी पर सवाब मिलता है

कुछ लोग इस तरह के होते हैं जो नमाज़ में शंकाओं को शीघ्र ही दूर करना चाहता हैं हालांकि وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ की मंशा कुछ और है। क्या ख़ुदा नहीं जानता ? हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर गिलानी(रहमुल्लाह अलैहि) का कथन है कि सवाब उस वक़्त तक है जब तक मुजाहिदात हैं और जब मुजाहिदात ख़त्म हुए तो सवाब समाप्त हो जाता है। मानो रोज़ा तथा नमाज़ उस वक़्त तक कर्म हैं जब तक एक पूर्ण कोशिश से शंकाओं का मुक़ाबला है लेकिन जब उनमें एक उच्च स्तर पैदा हो गया और रोजा तथा नमाज़ अदा करने वाले के तक़्वा के तकल्लुफ़ से बच कर सलाहीयत से रंगीन हो गया तो अब रोज़ा तथा नमाज़ कर्म नहीं रहे। इस मौक़ा पर उन्होंने सवाल किया कि क्या अब नमाज़ माफ़ हो जाती है ? क्योंकि सवाब तो उस वक़्त था जिस वक़्त तक तकल्लुफ़ करना पड़ता था। अत: बात यह है कि नमाज़ अब अमल नहीं बल्कि एक इनाम है। यह नमाज़ उस की एक ख़ुराक है जो उस के लिए कुर्रतुल ऐन (आंख़ों की ठंडक) है। यह मानो नक़्द बहिश्त है।

मुक़ाबल में वे लोग जो मुजाहिदात में हैं वे कुश्ती कर रहे हैं और यह नजात पा चुका है। इस का मतलब यह है कि इन्सान का सुलूक जब ख़त्म हुआ तो उस की परेशानियां भी ख़त्म हो गए जैसे एक नपुसंक अगर यह कहे कि वह कभी किसी औरत की तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखता तो वह कौन सी नेअमत या सवाब का अधिकारी है। इस में तो बुरी नज़रा का गुण है ही नहीं , लेकिन अगर एक पौरुषत्तव वाला मर्द ऐसा करे तो सवाब पाएगा। इसी तरह इन्सान को हज़ारों मुक़ामात तय करने पड़ते हैं। कई कई बातों में उमूर में उस का कोशशि करना उस को क़ादिर कर देता है। नफ़स के साथ उस की मुसालहत हो गई अब वह एक बहिश्त में है लेकिन वह पहले जैसा सवाब नहीं रहेगा। वह एक व्यापार कर चुका है जिसका वह नफ़ा उठा रहा है लेकिन पहला रंग ना रहेगा। इन्सान में एक कार्य बनावट से करते करते तबीयत का रंग पैदा हो जाता है। एक आदमी जो तिब्बी रूप से आन्नद पाता है वह इस योग्य नहीं रहता कि इस काम से हटाया जाए। वह अपने आप यहां से हट नहीं सकता। अत: इत्तिक़ा और तक़्वा की हद तक पूरी बात नहीं ख़ुलती। बल्कि वह एक किस्म का दावा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 18 से 19)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

जो अल्लाह तआला के लिए विनम्रता तथा विनय धारण करता है अल्लाह तआला उस के स्तर बढ़ाता है और जो अंहकार करता है अल्लाह तआला उस को अपमानित करता है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 मार्च 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के घटनाओं का या उनकी ज़िन्दगी के पहलूओं का सिलसिला चल रहा है। आज भी इस सिलसिला में कुछ सहाबा का ज़िक्र करूँगा। हज़रत ख़ौली बिन अबी ख़ौली रज़ि अल्लाह। हज़रत ख़ौली जंगे बदर और उहद और सारी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित रहे। अबू मअशर और मुहम्मद बिन उम्र कहते हैं कि हज़रत ख़ौली रज़ि अल्लाह जंगे बदर में अपने बेटे के साथ सम्मिलित हुए मगर उन्होंने बेटे का नाम ज़िक्र नहीं किया। मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं (ये सारे इतिहासकार हैं) कि हज़रत ख़ौली रज़ि अपने भाई मालिक बिन अबी ख़ौली रज़ि के साथ बदर में सम्मिलित थे। एक कथन के अनुसार जंगे बदर में हज़रत ख़ौली रज़ि और आपके दो भाई हज़रत हिलाल बिन अबी ख़ौली रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी ख़ौली रज़ि भी शामिल थे। हज़रत ख़ौली रज़ि ने हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के ज़माना ख़िलाफ़त में वफ़ात पाई।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 299 ख़ौली बिन अबी ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

दूसरे सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत राफ़िअ बिन अलमुअल्लाह। हज़रत राफ़िअ बिन अलमुअल्ला रज़ि का सम्बन्ध क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू हबीब से था। आपकी माता का नाम इदाम बिन्त औफ़ था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत राफ़िअ और हज़रत सफ़वान बिन बयज़ाअ रज़ि के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया। ये दोनों सहाबा जंगे बदर में सम्मिलित थे। कुछ रिवायात के अनुसार दोनों ही जंगे बदर में शहीद हुए। एक रिवायत यह भी है कि हज़रत सफ़वान बिन बयज़ा जंगे बदर में शहीद नहीं हुए थे। मूओसा बिन उक़बह की रिवायत है कि हज़रत राफ़िअ रज़ि और आप के भाई हिलअल बिन मुअल्ला दोनों जंगे बदर में सम्मिलित हुए। हज़रत राफ़िअ को इक़रिमह बिन अबुजहल ने जंगे बदर में शहीद किया था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 450 राफ़ेअ बिन अलमुअल्ला प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अल्इस्तेयाब जिल्द 2 पृष्ठ 484-485 राफ़े बिन अलमाला प्रकाशक दार अल्जैल बेरूत 1992 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ज़ुश्शमालैन उमैर बिन अब्दे अमरो रज़ि। उनका असल नाम उमैर था, और कुनिय्यत अबू मुहम्मद। हज़रत अमीर की कुनिय्यत अबू मुहम्मद थी जैसा कि बताया। इब्न हिशाम वर्णन करते हैं कि आप को ज़ुश्शमालैन कहा जाता था। यह नाम नहीं था बल्कि यह उनको एक उपनाम मिल गया था क्योंकि आप बाएं हाथ से ज़्यादा काम लेते थे। दूसरी रिवायत में यह है कि आप अपने दोनों हाथों से काम कर लेते थे। एक तरह इस्तिमाल कर लेते थे। इसलिए आप को ज़ुल- यदैन भी कहते थे। आप का सम्बन्ध क़बीला बनू ख़ुज़ाअ से था। आप बनू ज़ुहरह के हलीफ़ थे। हज़रत उमीर मक्का से हिजरत कर के मदीना में आए तो हज़रत सअदे बिन ख़ैसमह: के यहाँ निवास किया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की यज़ीद बिन हारिस रज़ि के साथ भाईचारा स्थापित फ़रमाया। ये दोनों सहाबा जंगे बदर में शहीद हो गए थे। आप जंगे बदर में शहीद हुए जैसा कि ज़िक्र हो गया है और आप को उसामा जुशमी ने शहीद किया था। शहादत के वक़्त आपकी उम्र 30 साल से अधिक थी। तबक़ात अलकुबरा में अबू उसामा जुशमी नाम आया है कि उसने क़त्ल किया था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 124-125 ज़ुलयदैन व यकाल ज़ुश्शमालैन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई) (सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ 327 बाब मन हज़र बदरा मन बनी ज़हरत हलफ़ाइहुम प्रकाशक इब्न हज़म बेरूत 2009ई) (असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 217 ज़ुलयदैन प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत राफ़िअ बिन यज़ीद रिज़। एक रिवायत में आप का नाम राफ़े बिन ज़ीद रज़ि भी वर्णन किया गया है। हज़रत राफ़े बिन यज़ीद का सम्बन्ध अंसार के क़बीला ओस की शाख़ बनू ज़ऊरा बिन अब्दे अश्शहल से था। हज़रत राफ़े की माता अक़रब बिन्ते मुआज़ मशहूर सहाबी हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि की बहन थीं। हज़रत राफ़S रज़ि के दो बेटे उसैद और अबदुर्रहमान थे। इन दोनों की माता का नाम अक़रब बिन्त सलामा था। हज़रत राफ़े जंगे बदर उहद में सम्मिलित हुए। एक रिवायत के अनुसार आप जंगे बदर के दिन सईद बिन ज़ीद रज़ि के ऊंट पर सवार थे। आप जंगे उहद में शहीद हुए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 337 राफ़े बिन यज़ीद प्रकाशन दार अल्कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 235 राफ़े बिन ज़ैद प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ज़क़वान बिन अब्द क़ैस रज़ि। उनकी कुनिय्यत अबवाबुस्सबुअ थी। हज़रत ज़क्वान रज़ि का सम्बन्ध अंसार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू ज़ुरैक़ से था। आप की कुनिय्यत अबू अबवाबुस्सबुअ है। आप बैअत उक़बा औला और दूसरी में भी सम्मिलित रहे। आप की एक नुमायां काबिले ज़िक्र बात यह है कि आप मदीना से हिजरत कर के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मक्का गए। उस वक़्त तक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में ही थे। आप को अन्सारी मुहाजिर कहा जाता था। आप वहां मक्का जा के कुछ समय रहे। या समझना चाहिए कि हिजरत कर के आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए। आप जंगे बदर और उहद में सम्मिलित थे और जंगे उहद में शहादत का रुत्बा पाया। आप को अबोहकम बिन अख़नस ने शहीद किया था। हज़रत ज़क़वान बिन अबद क़ैस को अन्सारी मुहाजिर कहा जाता है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 210 ज़कवान बिन अबद क़ैस प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अल्लामा इब्ने साद तब्क़ाते कुबरा में लिखते हैं कि मदीना हिजरत के समय जब मुसलमान मदीना रवाना हुए तो क़ुरैश सख़्त नाराज़ थे और जो नौजवान हिजरत कर के जा चुके थे उन पर उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया। अन्सार के एक गिरोह ने दूसरी उक़बा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की थी और इस के बाद वापस मदीना चले गए थे। जब इबतिदाई मुहाजरीन क़बुअ पहुंच गए तो यह अंसार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मक्का गए और आप के सहाबा के साथ हिजरत कर के मदीना आए। इसी तुलना से उन्हें अंसार मुहाजरीन कहा जाता है। इन सहाबा में हज़रत ज़क़वान बिन अब्दे क़ैस,

हज़रत उक़्बह बिन वह्ब रज़ि हज़रत अब्बास बिन उबादह रज़ि और और हज़रत ज़याद बिन लबीद रज़ि शामिल थे। इस के बाद सारे मुसलमान मदीना चले गए थे सिवाए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबूबकर रज़ि और हज़रत अली रज़ि के या वह जो फ़ित्ना में थे, क़ैद में थे, मरीज़ थे या वे जो कमज़ोर और दुर्बल थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 1 पृष्ठ 175 ज़िक्र इज़न रसूलुल्लाह लिल्मुस्लेमीन फिल् हिजरत इलमदीनत: प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सुहैल बिन अबी सालिह से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के लिए निकले। आप ने एक मुक़ाम की तरफ़ इशारा करते हुए सहाबा से सम्बोधित हो कर फ़रमाया कि इस तरफ़ कौन जाएगा? बनी ज़ुरेक़ में से एक सहाबी हज़रत ज़क्वान बिन अब्द क़ैस अबू असस्सबा खड़े हुए। कहने लगे हे अल्लाह के रसूल! मैं जाऊँगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम कौन हो? हज़रत ज़क्वान ने कहा कि मैं ज़क्वान बिन अब्दे क़ैस हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैठ जाने का इरशाद फ़रमाया। आप ने यह बात तीन बार दुहराई। फिर आप ने फ़रमाया कि अमुक अमुक जगह पर चले जाओ। इस पर हज़रत ज़क्वान बन अब्दे क़ैस ने निवेदन की हे अल्लाह के रसूल! यक़ीनन में ही इन जगहों पर जाऊँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो कोई ऐसे आदमी को देखना चाहता है जो कल जन्नत की हरयाली पर चल रहा होगा तो इस आदमी की तरफ़ देख ले। इस के बाद हज़रत ज़कवान अपने घर वालों को अलविदा कहने गए। आप की बीवियां और बेटियां आप से कहने लगीं कि आप हमें छोड़कर जा रहे हैं! उन्होंने अपना दामन उनसे छुड़ाया और थोड़ा दूर हट कर उनकी तरफ़ चेहरा कर के सम्बोधन किया कि अब क़यामत के दिन ही मुलाक़ात होगी। इस के बाद जंगे उहद में ही आप ने शहादत का रुत्बा पाया ।

(मारफ़त अस्सहाबा लेअबी नईम जिल्द 2 पृष्ठ 248 ज़क्वान बिन अब्द क़ैस बन ख़ालिद हदीस 2621 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002ई)

जंगे उहद के दिन रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि किसी को ज़क्वान बिन अब्द केस का पता है? हज़रत अली रिज़ ने निवेदन की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैंने एक घुड़सवार देखा जो ज़क्वान का पीछा कर रहा था यहां तक कि वह उनके क़रीब पहुंच गया और वह यह कह रहा था कि अगर आज तुम ज़िंदा बच गए तो मैं नहीं बच सकूँगा। उसने हज़रत ज़क्वान रज़ि को जो कि पैदल थे पर हमला कर के आप को शहीद कर दिया और उन्होंने निवेदन किया कि यह कहते हुए आप पर वार कर रहा था कि देखो मैं इब्न इलाज हूँ। हज़रत अली रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने इस पर हमला किया और इस की टांग पर अपनी तलवार मार कर आधी जांघ से काट डाला। फिर उसे घोड़े से उतारा और उसे क़त्ल कर दिया। हज़रत अली रज़ि फ़रमाते हैं। मैंने देखा था कि वह अबू अलुहकम बिन अख़नस था।

(किताबुल मग़ाज़ी लिल्वाक़दी जिल्द 1 पृष्ठ 245 बाब ग़ज़वा उहद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2013 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ख़्ववात बिन जुबैर अन्सारी। उनकी कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह और अबू सालिह भी थी। हज़रत ख़व्वात रज़ि का सम्बन्ध बनू सअलबह से था और हज़रत ख़व्वात बिन जुबैर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के भाई थे जिन्हें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद में दर्रे की हिफ़ाज़त के लिए पचास तीर अंदाज़ों के साथ मुक़र्रर फ़रमाया था,अर्थात उनके भाई को (मुक़र्रर फ़रमाया)। हज़रत ख़व्वात मध्यम क़द के थे। आप ने चालीस हिज्री में 74 बरस की उम्र में मदीना में वफ़ात पाई। एक रिवायत के अनुसार वफ़ात के वक़्त आप की उम्र 94 साल थी। आप मेहंदी और वसिमा का ख़िज़ाब लगाया करते थे। हज़रत ख़व्वात भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग बदर के लिए रवाना हुए लेकिन रास्ते में एक पत्थर की नोक लगने से आप ज़ख़्मी हो गए। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को वापस मदीना भिजवा दिया। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको जंगे बदर के माले ग़नीमत और बदला में शामिल फ़रमाया। मानो आप उन लोगों की तरह ही थे जो जंगे बदर में शामिल हुए। आप जंगे उहद, ख़ंदक़ और अन्य सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए।

हज़रत ख़व्वात रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुक़ाम मर अज़्ज़हरान में पड़ाव किया। कहते हैं कि मैं अपने ख़ेमे से निकला तो कुछ औरतें बातें कर रही थीं। मुझे यह देखकर दिलचस्पी पैदा हुई। अत: मैं वापस गया और एक जुब्बह पहन कर उनके साथ बैठ गया। अपने आपको छिपा लिया और औरतों की बातें सुनने के लिए वहां बैठ गया। इसी समय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ लाए। जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो डर गया और आप से कहा कि मेरा ऊंट भाग निकला है मैं उसे ढूंढ रहा हूँ। मैं खड़ा हो गया और शीघ्र निवेदन किया। आप चल पड़े। आगे चले गए। मैं भी आप के पीछे पीछे हो लिया। आप ने अपनी चादर मुझे पकड़ाई जो ओढ़ी हुई थी और झाड़ियों में चले गए और शौच के बाद आप ने वुज़ू किया और वापस आए। आप की दाढ़ी से पानी के क़तरे आप के सीने पर गिर रहे थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मज़ा करते हुए मुझसे पूछा कि हे अबू अब्दुल्लाह! उस ऊंट ने किया-किया? अब ऊंट तो कोई नहीं गुमा था और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एहसास हो गया था कि वैसे ही यह बातें सुनने के लिए बैठे हुए हैं और यह चीज़ अच्छी नहीं है। बहरहाल कहते हैं। फिर हम रवाना हो गए। इस के बाद जब भी आप मुझे मिलते, सलाम करते और पूछते कि अबू अब्दुल्लाह उस ऊंट ने किया-किया? जब इस तरह बार-बार होना शुरू हुआ। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हवाले से मज़ाक के तौर पर मुझे छेड़ते थे तो मैं मदीना में छिप कर रहने लगा और मस्जिद और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस से अलग रहने लगा। जब इस बात को कुछ समय गुज़र गया तो मस्जिद गया और नमाज़ के लिए खड़ा हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अपने कमरे से बाहर तशरीफ़ ले आए। आप ने दो रकात नमाज़ अदा की। मैं इस उम्मीद पर नमाज़ लंबी करता गया कि आप तशरीफ़ ले जाएं और मुझे छोड़ दें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह! जितनी मर्ज़ी नमाज़ लंबी कर लू। मैं यहीं हूँ। मैंने अपने दिल में कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्षमा कर के आप का दिल अपने बारे में साफ़ कर दूँगा। जब मैंने सलाम फेरा तो आप ने फ़रमाया कि अबू अब्दुल्लाह ! तुम पर सलामती हो। इस ऊंट के भाग जाने का क्या मामला है? मैंने निवेदन किया। उस हस्ती की क़सम! जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस किया है जब से मैंने इस्लाम क़बूल किया है वह ऊंट नहीं भागा। आप ने तीन बार फ़रमाया कि अल्लाह तुम पर रहम करे। फिर उस के बाद आप ने कभी मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहा।

(अत्तबक़ातुत कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 362 से 364 अब्दुल्लाह बिन जुबैर,ख़व्वात बिन जुबैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 190 ख़व्वात बिन जुबैर प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई) मानो एक तो इस बात से कि मुझ से ना छुपाओ मुझे पता है असल क़िस्सा किया है। दूसरे इस तरह बैठ के बिला कारण लोगों की मज्लिस में उनकी बातें सुनना जो है वह ग़लत बात है।

हज़रत ख़व्वात रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार मैं बीमार हुआ तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी इयादत फ़रमाई। जब मैं ठीक हो गया तो आप ने फ़रमाया। हे ख़व्वात! तुम्हारा जिस्म तन्दरुस्त हो गया है। अत: जो तुमने अल्लाह से वादा किया है वह पूरा करो। मैंने निवेदन किया। मैंने अल्लाह से कोई वादा नहीं किया। आप ने फ़रमाया कि कोई भी मरीज़ ऐसा नहीं कि जब वह बीमार होता है तो कोई नज़र नहीं मानता या नीयत नहीं करता। ज़रूर कहता है कि अल्लाह तआला मुझे तन्दरुस्त कर दे तो मैं यह करूँगा, वह करूँगा। अत: अल्लाह से किया हुआ वादा वफ़ा करो। जो भी तुमने बात कही है उसे पूरा करो।(मुसतदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 467 किताब मअरफ़तुल सहाबा बाब ज़िक्र मनाक़िब ख़व्वात बिन जुबैर अल्अन्सारी हदीस 5750 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)अत: यह ऐसी बात है जो हम सब के लिए काबिल-ए-ग़ौर और काबिल-ए-तवज्जा है।

जंग ख़ंदक़ के अवसर पर जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनू क़ुरैज़ा के वादा तोड़ने की सूचना मिली तो आप ने एक वफ़द उनकी तरफ़ भेजा। इस बारे में सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने लिखा है वह घटना इस तरह है कि

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब बनू क़ुरैज़ा की इस ख़तरनाक ग़द्दारी का पता चला तो आप ने पहले तो दो तीन बार ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया ज़ुबीर बिन अल्अवाम को हालात पता करने के लिए भेजा और फिर नियिमत रूप से क़बीला औस तथा ख़ज़रज के रईस साद बिन मुआज़ रज़ि और साद बिन उबादह रज़ि और कुछ दूसरे प्रभावशाली सहाबा को एक वफ़द के तौर पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना फ़रमाया और उनको यह ताकीद फ़रमाई कि अगर कोई भय की ख़बर हो तो वापस आकर उस का सब के समाने इज़हार ना करें बल्कि इशारा से काम लें ताकि लोगों में भय ना पैदा हो। जब ये लोग बनू क़ुरीज़ा के घरों में पहुंचे। जहां उनकी रिहायश थी, घर थे और उनके रईस काब बिन असद के पास गए तो वह बदबख़्त उनको निहायत गर्व वाले अंदाज़ से मिला और सादैन अर्थात साद बिन माज़ रज़ि और साद बिन अबादह रज़ि की तरफ़ से मुआहिदा का ज़िक्र होने पर वह और उस के क़बीला के लोग बिगड़ कर बोले कि जाओ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और हमारे मध्य कोई सन्धि नहीं है। ये शब्द सुनकर सहाबा का ये वफ़द वहां से उठ कर चला आया और साद बिन माज़ रज़ि और साद बिन अबादह रज़ि ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उचित तरीक़ पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हालात से सूचना दी।

(सीरत ख़ात्मुल अन्बिया लेखस हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए पृष्ठ 584-585)

ये भी है कि सहाबा की इस सोहबत में हज़रत ख़ब्बात बिन ज़ुबैर रज़ि भी शामिल थे।

(सीरत इब्न हिशाम पृष्ठ 456 बाब जंग अल्ख़नदक़ फ़ी सनते ख़मसीन प्रकाशन दार इब्न हज़म 2009 ई)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ब्बात रज़ि को अपने घोड़े पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना फ़रमाया और इस घोड़े का नाम जनाह था।

(मुस्तदरक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 466 किताब मारफ़तुस्सहाबा बाब ज़िक्र मनाक़िब ख़ब्बात बिन जुबैर अल्अन्सारी हदीस 5747 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत ख़ब्बात रज़ि वर्णन करते हैं कि एक बार हम हज़रत उमर रज़ि के साथ हज के लिए रवाना हुए। इस क़ाफ़िले में हमारे साथ हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि और हज़रत अबदुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ि भी थे। लोगों ने कहा कि हमें ज़िरार, (ज़िरार बिन ख़त्ताब क़ुरैश का एक शायर था जो फ़तह मक्का पर ईमान लाए थे) के अशआर सुनाओ। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि अबू अब्दुल्लाह अर्थात ख़ब्बात को अपने अशआर सुनाने दो। इस पर मैं उन्हें अशआर सुनाने लगा यहां तक कि सुब्ह हो गई। तब हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि बस कर दो कि अब सुब्ह का वक़्त है।

(अल्असाबा जिल्द 2 पृष्ठ 292 ख़ब्बात बिन जबीर रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995ई)(अत्तबक़ात अल्कुबरा जिल्द 6 पृष्ठ 10 ज़रार बिन अल्ख़त्ताब रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत रबीआ बिन अक्सम रज़ि। उनकी कुनिय्यत अबू यज़ीद थी। हज़रत रबीअ: रज़ि छोटे क़द और मोटे जिस्म के मालिक थे। आप का सम्बन्ध क़बीला असद बिन ख़ुज़ैमह से था। हज़रत रबीअ: की गिनती मुहाजिर सहाबा में होती है। मदीना हिजरत के बाद आप ने कुछ अन्य सहाबा के साथ हज़रत मुबश्शर बिन अबदुल मुन्ज़िर रज़ि के घर में निवास किया। जंगे बदर में शामिल होते समय आप की उम्र तीस बरस थी। जंगे बदर के इलावा आप ने जंगे उहद, जंगे ख़ंदक़, सुलह हुदैबिया और जंगे ख़ैबर में भी शिरकत की और जंगे ख़ैबर में ही शहादत का रुत्बा भी पाया। आप को हारिस नामी यहूदी ने नतत नामक स्थान पर शहीद किया। नतात ख़ैबर में मौजूद एक क़िला का नाम है। शहादत के वक़्त आप की उम्र 37 साल थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 257 रबीया बिन अक्सम प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 66,70 अब्दुल्लाह बिन जह्श, रबीया बिन अक्सम प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत रिफ़ाअ बिन अम्रो अल्जुहनी रज़ि। उनका नाम वदीअ: बिन अम्रो भी वर्णन किया जाता है। हज़रत रिफ़ाअ रज़ि जंगे बदर और उहद में सम्मिलित हुए। आप अंसार के क़बीला बनू नज्जार के हलीफ़ थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 287 रफ़ाअ बिन अम्रो अलजहनी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ज़ैद बिन वदीअह। हज़रत ज़ैद रज़ि का सम्बन्ध अंसार के क़बीला ख़ज़रज से था। आप ने बैअत उक़बा, जंगे बदर और उहद में भी शिरकत की और जंगे उहद में ही शहादत का रुत्बा हासिल किया।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 377 ज़ैद बिन वदीअ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत ज़ैद रज़ि की माता उम्मे ज़ैद बिन्त हारिस थीं। आप की पत्नी का नाम ज़ैनब बिन्त सहल था। जिस से आप के तीन बच्चे सइद बिन ज़ैद। उमामा और उम्मे कुल्सूम शामिल हैं। आप के बेटे सअद हज़रत उमर के दौरे ख़िलाफ़त में इराक़ आ गए थे और वहां अक़र्क़ूफ़ के स्थान पर आबाद हो गए थे। अक़र्क़ूफ़ इराक़ के शहर बग़दाद के क़रीब एक बस्ती का नाम है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 410 ज़ैद बिन वदीअ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(मुअज्जमुल बुलदान जिल्द 4 पृष्ठ 155 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत रिब्इई बिन राफ़ेअ अन्सारी रज़ि। आप के दादा के नाम में मतभेद है। एक कथन के अनुसार नाम हारिस था जबकि दूसरे के अनुसार ज़ैद था। हज़रत रबई बिन राफ़ेअ का सम्बन्ध बनू अज्लान से था और आप जंगे बदर और उहद में शामिल हुए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 356-357 रबई बिन वदीअ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 252 रबई बिन वदीअ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत ज़ैद बिन मुज़य्यन रिज़। मुज़य्यन बिन क़ैस उनके पिता का नाम था। हज़रत ज़ैद रज़ि का नाम यज़ीद बिन अल्मुज़य्यन भी वर्णन हुआ है। आप का सम्बन्ध ख़ज़रज क़बीला से था। हज़रत ज़ैद रज़ि जंगे बदर और उहद में सम्मिलित हुए। हिजरत मदीना के वक़्त आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ि और हज़रत मिस्तह बिन उसासह के मध्य भाईचारा क़ायम फ़रमाया। आप की औलाद में बेटा अमरो और बेटी रम्लह थीं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 375 ज़ैद बिन अलमुज़य्यन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 407 यज़ीद बिन अलमुज़य्यन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत इयाज़ बन ज़ुबैर रज़ि है । उनकी कुनिय्यत अबू साद थी। हज़रत इयाज़ की माता का नाम सल्मा बिन्त आमिर था। आप का सम्बन्ध फ़िह्र क़बीला से था। आप हब्शा की तरफ़ दूसरी हिजरत में शामिल हुए। वहां से वापस आकर मदीना हिजरत की और हज़रत कुल्सूम बिन अलहिद्म रज़ि के यहाँ निवास किया। आप ने जंगे बदर, जंगे उहद और ख़ंदक़ सहित सारी जंगों में शिरकत की। हज़रत असमान रज़ि के ख़िलाफ़त के ज़माना में तीस हिज्री में मदीना में आप ने वफ़ात पाई और एक रिवायत में है कि आप की वफ़ात सीरिया में हुई।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 318-319 ई आज़ बिन ज़हीर प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 4 पृष्ठ 311 ईआज़ बिन ज़हीर प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर अगले सहाबी हैं हज़रत राफ़ेअ बिन अम्रो अन्सारी रज़ि। उनकी कुनिय्यत अबू वलीद थी। हज़रत रिफ़ाअ का सम्बन्ध क़बीला बनू औफ़ बिन ख़ज़रज से था। आप की माता का नाम उम्मे रिफ़ाअ था। आप सत्तर अंसार के साथ बैअत उक़बा सानिया में शामिल हुए। आप ने जंगे बदर और उहद में शिरकत की और जंगे उहद में शहीद हुए ।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 410-411 रफ़ाअ बिन अमरो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अगले सहाबी हैं हज़रत ज़ियाद बन अम्रो रज़ि। हज़रत ज़ियाद को इब्न

बिशर भी कहा जाता था। आप अंसार के हलीफ़ थे। हज़रत ज़ियाद जंगे बदर में सम्मिलित थे। आप के भाई हज़रत ज़मुरह भी जंगे बदर में सम्मिलित थे। आप का सम्बन्ध क़बीला बनू साइदह बिन कअुब से था। एक दूसरे कथन के अनुसार आप बनू साइदह बिन काब बिन अलख़ज़रज़ के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 338 ज़ियाद बिन अमरो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अल्असाबा जिल्द 2 पृष्ठ 483 ज़ियाद बिन अमरो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र होगा उनका नाम हज़रत सालिम बिन उमैर बिन साबित रज़ि है। हज़रत सालिम का सम्बन्ध अंसार के क़बीला बनू अमरो बिन औफ़ से था। आप बैअत उक़बा में शामिल हुए। हज़रत सालिम जंगे बदर और उहद और ख़ंदक़ और सारी जंगों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 387 सालिम बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

जंगे तबूक के अवसर पर जो ग़रीब सहाबा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वे जंगे तबूक के लिए जाना चाहते थे और सवारी ना होने की वजह से रोते थे, हज़रत सालिम भी उन सहाबा में शामिल थे। ये सात ग़रीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी आप के पास आए उस वक़्त आप तबूक के लिए जाना चाहते थे। इन सहाबा ने निवेदन किया कि हमें सवारी दीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मेरे पास कोई सवारी नहीं जिस पर मैं तुम लोगों को सवार करूँ। वे लोग वापस गए। आँखों में इस ग़म की वजह से आँसू जारी थे कि ख़र्च करने को कुछ ना पाया। इब्न अब्बास रज़ि रिवायत करते हैं कि आयत

وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ

(अत्तौब::92) अर्थात और ना उन लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तेरे पास उस वक़्त आए जब जंग का ऐलान किया गया था इसलिए कि तो उनको कोई सवारी मुहय्या कर दे तो तूने जवाब दिया कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं है जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ और यह जवाब सुनकर वे चले गए और इस ग़म से उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे कि अफ़सोस उनके पास कुछ नहीं जिसे ख़ुदा की राह में ख़र्च करें। तो इब्न अब्बास रज़ि कहते हैं कि आयत में जिन लोगों का ज़िक्र है उन में ये सालिम बिन उमैर रज़ि और सअलब: बिन ज़ैद रिज़ शामिल थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 366 सालिम बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 387 सालिम बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि सूरत तौबा की इस आयत की अर्थात यह आयत जो है وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا इस की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि

यह आयत अपने इतलाक़ की दृष्टि से आम ही है मगर जिन अदमियों की तरफ़ इशारा है वे सात ग़रीब मुसलमान थे जो जिहाद पर जाने के लिए व्याकुल थे मगर अपने दिल की ख़ाहिश को पूरा करने के सामान नहीं रखते थे। ये लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हमारे लिए सवारी का प्रबन्ध फ़र्मा दें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अफ़सोस है मैं कोई प्रबन्ध नहीं कर सकता तो उनको बड़ी तकलीफ़ हुई उनकी आँखों में आँसू भर आए और वे वापस चले गए।कहते हैं कि उनके चले जाने के बाद (यह रिवायत आती है कि उनके चले जाने के बाद) हज़रत उसमान रज़ि ने तीन ऊंट दिए और चार दूसरे मुसलमानों ने दिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर एक आदमी को एक एक ऊंट दे दिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि क़ुरआन ने यह घटना इसलिए वर्णन की है ताकि इन ग़रीब मुसलमानों के इख़लास का मुक़ाबला कर के दिखाए जो थे तो मालदार और सफ़र पर जाने के माध्यम भी रखते थे मगर झूठे बहाने तलाश करते थे। (कुछ लोग ऐसे थे जो बहाने तलाश कर रहे थे और नहीं गए। लेकिन जो ग़रीब थे उनका जज़्बा बिलकुल और था ताकि मुक़ाबला हो जाए) फिर आगे फ़रमाते हैं कि इस आयत से यह भी मालूम होता है कि जो लोग मदीने में पीछे रह गए थे। वे सब मुनाफ़िक़ ना थे बल्कि उनमें मुख़लिस मुसलमान भी थे मगर वे इसलिए नहीं जा सके कि उनके पास जाने के सामान ना थे।

(दरूस हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि (अप्रकाशित) तफ़सीर सूरत अत्तौब: आयत 92)

इस की तफ़सीर में वर्णन करते हुए आप ने और अधिक फ़रमाया है कि अबू मूसा उन लोगों के सरदार थे। जब उनसे पूछा गया कि आप ने उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या मांगा था? तो उन्होंने कहा ख़ुदा की क़सम! हमने ऊंट नहीं मांगे। हमने घोड़े नहीं मांगे।हमने सिर्फ ये कहा था कि हम नंगे-पाँव हैं। जूती भी नहीं थी पांव में और इतना लंबा सफ़र पैदल नहीं चल सकते। पांव ज़ख़्मी हो जाऐंगे तो फिर जंग लड़ नहीं सकते। अगर हमको सिर्फ़ जूतियों के जोड़े मिल जाएं तो हम जूतियां पहन कर ही भागते हुए अपने भाईयों के साथ इस जंग में सम्मिलित होने के लिए पहुंच जाऐंगे।

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 361)

यह ग़रीबी की हालत थी। यह जज़्बा था। हज़रत सालिम बिन उमैर रज़ि हज़रत मुआिवया रज़ि के ज़माना तक ज़िंदा रहे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 387 सालिम बिन उमैर रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर अगले सहाबी हज़रत सुराक़ह बिन कअुब रज़ि हैं। हज़रत सुराक़ा का सम्बन्ध क़बीला बनू नज्जार से था। आप की माता का नाम उमैर बिन्त नोमान था। हज़रत सुराक़ह जंगे बदर और उहद और ख़ंदक़ समेत सारी जंगों में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। हज़रत सुराक़ह बिन काब रज़ि हज़रत मुआिवया रज़ि के ज़माने में फ़ौत हुए और कलबी की रिवायत के अनुसार हज़रत सुराक़ह जंग यमामा में शहीद हुए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 371 सुराक़ा बिन काब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 412 सुराक़ा बिन काब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम हज़रत साइब बिन मज़ऊन रज़ि है । हज़रत साइब बिन मज़ऊन हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ि के सगे भाई थे। आप हब्शा की तरफ़ हिजरत करने वाले अव्वलीन मुहाजिरों में से थे। हज़रत साइब को जंगे बदर में शामिल होने की सआदत नसीब हुई।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 399 साइब बिन मज़ाऊन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब जंगे बुवात के लिए रवाना हुए तो कुछ रिवायात के अनुसार आप ने हज़रत साद बिन मज़ऊन को और कुछ के अनुसार हज़रत साइब बिन उसमान रज़ि को अपने पीछे अमीर निर्धारित फ़रमाया और एक रिवायत में हज़रत साइब बिन मज़ऊन रज़ि का नाम भी मिलता है।

(अस्सीरतुल अलहलिबया जिल्द 2 पृष्ठ 174 बाब ज़िक्र मग़ाज़ी जंग बुवात प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002ई)

हज़रत साइब रज़ि को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ व्यापार करने का सम्मान भी हासिल है। अत: सुनन अबी दाऊद की रिवायत है कि हज़रत साइब रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो सहाबा ने आप के सामने मेरा ज़िक्र और प्रशंसा करनी शुरू कर दी। इस पर आप ने फ़रमाया। मैं उसे तुम से ज़्यादा जानता हूँ। मैंने निवेदन किया। صَدَقْتَ بِاَبِيْ اَنْتَ وَاُمِّيْ ۔ كُنْتَ شَرِيْكِيْ فَنِعْمَ الشَّرِيْكُ ۔ كُنْتَ لَا تُدَارِيْ وَلَا تُمَارِيْ अर्थात मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हूँ! आप ने सच फ़रमाया। आप व्यापार में मेरे साथ शामिल थे और क्या ही बेहतरीन शामिल होने वाले थे। आप ना ही विरोध करते और ना ही झगड़ा करते थे।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब बाब फ़ी कराहियितल मरा हदीस 4836)

सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में इस घटना को इस तरह दर्ज किया गया है कि मक्का से व्यापार के क़ाफ़िले विभिन्न इलाक़ों की तरफ़ जाते थे। दिक्षण में यमन की तरफ़ और उत्तर में सीरिया की तरफ़ तो नियिमत व्यापार का सिलसिला जारी था। इस के इलावा बहरीन इत्यादि के साथ भी तिजारत थी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्राय: इन सब देशों में तिजारत के उद्देश्य से गए और हर बार निहायत दियानत तथा अमानत और अच्छे आचरण और हुनरमंदी के साथ अपने फ़र्ज़ को अदा किया। मक्का में भी जिन लोगों के साथ आप का मामला पड़ा वे

सब आप की तारीफ़ करते थे; अत: साइब रज़ि एक सहाबी थे। (जिनका ज़िक्र हो रहा है) वह जब इस्लाम लाए तो कुछ लोगों ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने उनकी तारीफ़ की। आप ने फ़रमाया में उनको तुमसे ज़्यादा जानता हूँ। साइब रिज़ ने निवेदन की। हाँ हे अल्लाह के रसूल! आप पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हूँ। आप एक बार तिजारत में मेरे सम्मिलित थे और आप ने हमेशा निहायत साफ़ मामला रखा।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीम लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 106)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत आसिम बिन क़ैस रज़ि। हज़रत आसिम बिन क़ैस रज़ि का सम्बन्ध अंसार के क़बीला सअ़लबा बिन अमरो से था। जंगे बदर और जंगे उहद में सम्मिलित हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 112-113 आसिम बिन क़ैस प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अगले सहाबी हैं हज़रत तुफ़ैल बिन मालिक बिन ख़न्सा रज़ि। हज़रत तुफ़ैल रज़ि का सम्बन्ध क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू उबैद बिन अदी से था। हज़रत तुफ़ैल रज़ि की माता का नाम अस़मा बिन्त अलक़ैन था। हज़रत तफ़ैल रज़ि बैअत उक़बा और जंगे बदर और जंगे उहद में शामिल हुए। आप की शादी इदाम़ बिन्त क़ुऱत से हुई जिन से आप के दो बेटे अब्दुल्लाह और रबीअ पैदा हुए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 430-431तुफ़ैल बिन मालिक प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 79 तुफ़ैल बिन मालिक बन ख़ुन्सा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत तुफ़ैल बिन नुअ़मान रज़ि। हज़रत तुफ़ैल का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज से था। आप की माता ख़ऩुसा बिन्त रिआब थीं जो कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि की फूफी थीं। हज़रत तुफ़ैल रज़ि की एक बेटी थीं जिनका नाम रुबिय्या था। आप बैअते उक़बा और जंगे बदर में शामिल हुए। हज़रत तुफ़ैल रज़ि ने जंगे उहद में भी शिरकत की और इस दिन आप को तेरा ज़ख़्म आए थे। हज़रत तुफ़ैल बिन नुअमान रज़ि जंगे ख़ंदक़ में भी शामिल हुए और इसी जंगे में शहादत का रुत्बा भी हासिल किया। वह़शी बिन ह़रब ने आप को शहीद किया था। बाद में वहशी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आया था। वहशी कहा करता था कि अल्लाह तआला ने हज़रत हमज़हा को और हज़रत तुफ़ैल बिन नुअमान रज़ि को मेरे हाथों से इज़्ज़त बख़्शी लेकिन मुझे उनके हाथों से ज़लील नहीं किया अर्थात में कुफ्र की हालत में क़त्ल नहीं किया गया।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 431 अत्तुफ़ैल बिन अलनुअमान प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 79-80 तुफ़ैल बिन मालिक, तुफ़ैल बिन अलनुअमान प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अगले सहाबी हज़रत ज़ह्हाक बिन अब़ुदे अम़रो रज़ि हैं । उनका सम्बन्ध बनू दी़नार बिन नज्जार से था। आप के पिता का नाम अबद अमरो और आप की माता का नाम सुमैरा बिन्त क़ैस था। आप और आप के भाई हज़रत नुअमान बिन अब्द अमरो रज़ि जंगे बदर और उहद में सम्मिलित हुए। हज़रत नुअमान रज़ि ने जंगे उहद में शहादत पाई। आप के तीसरे भाई क़ुत्बह बिन अब्द अमरो बेअरे मऊना की घटना के दिन शहीद हुए थे।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 394 ज़ह्हाक बिन अबद अमरो , नोमान बिन अबद अमरो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर अगले सहाबी हैं ज़ह्हाक बिन हारिस: रज़ि। हज़रत ज़ह्हाक रज़ि अन्सार के क़बीला ख़ज़रज से सम्बन्ध रखते थे। आप के पिता का नाम हारसा और माता का नाम हिन्द बिन्त मालिक था। हज़रत ज़ह्हाक रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सत्तर अन्सार के साथ बैअत उक़बा में शामिल हुए। आप ने जंगे बदर में भी शिरकत की। आप के बेटे का नाम यज़ीद था जो कि आप की पत्नी उमामह बिन्त मुहर्रिस के गर्भ से पैदा हुए।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 433 ज़ह्हाक बिन हारिसा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 46 ज़ह्हाक बिन हारिसा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

फिर अगले सहाबी हैं हज़रत ख़ल्लाद बिन सुवैयद रज़ि। यह अन्सारी थे। हज़रत ख़ल्लाद रज़ि का सम्बन्ध ख़ज़रज की शाख़ बनू हारिस से था। आप की माता का नाम उम़रह् बिन्त साद था। आप के एक बेटे हज़रत साइब को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगत नसीब हुई और बाद में हज़रत उमर ने उन्हें यमन का गवर्नर भी मुक़र्रर फ़रमाया। दूसरे बेटे का नाम हकम़ बिन ख़ल्लाद था। इन दोनों की माता का नाम लैला बिन्त उबादा था। हज़रत ख़ल्लाद रज़ि बैअत उक़बा में शामिल हुए। आप ने जंगे बदर और उहद और ख़ंदक़ में शिरकत की। जंगे बनू क़ुरैज़ा में एक यहूदी औरत ने जिसका नाम बुनानह था ऊपर से आप पर भारी पत्थर फेंका जिससे आप का सिर फट गया और आप शहीद हो गए। इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ल्लाद के लिए दो शहीदों के बराबर बदला है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस औरत को भी बदला के रूप में फिर बाद में क़त्ल करवा दिया था।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 401-402 ख़ल्लाद बिन सुवैद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन में इस घटना का ज़िक्र इस तरह लिखा है कि कुछ मुसलमान जो उन के क़िला की दीवार के पास हो कर थोड़ा आराम करने बैठे थे उन पर एक यहूदी औरत बुनानह नामक ने क़िला के ऊपर से एक भारी पत्थर फेंक कर उन में से एक आदमी ख़ल्लाद नामक को शहीद कर दिया और बाक़ी मुसलमान बच गए।

(सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 598)

फिर आता है कि हज़रत ख़ल्लाद रज़ि की माता को जब आप की शहादत की सूचना मिली तो आप निक़ाब कर के तशरीफ़ लाईं। उनसे कहा गया कि ख़ल्लाद शहीद कर दिए गए हैं और आप नक़ाब कर के आई हैं। इस पर उन्होंने कहा कि ख़ल्लाद रज़ि तो मुझ से जुदा हो गया है लेकिन में अपनी लज्जा को ख़ुद से जुदा नहीं होने दूँगी। यह रोना जो रिवाज था वह इस तरह नहीं होगा और पर्दा लज्जा है वह तो क़ायम रहेगी।

हज़रत ख़ल्लाद रज़ि की शहादत पर यह विस्तार आगे इस तरह भी आता है कि हज़रत ख़ल्लाद रज़ि की शहादत पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनके लिए दो शहीदों का बदला है जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है। लेकिन अधिक इस में यह है। जब पूछा गया कि हे अल्लाह के रसूल ऐसा क्यों है? दो शहीदों का बदला किस लिए? तो आप ने फ़रमाया क्योंकि उन्हें अहले किताब ने शहीद किया है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 402 ख़ल्लाद बिन सुवेद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अगले सहाबी हैं हज़रत औ़स बिन ख़ौ़ली अन्सारी रज़ि। उनकी कुनिय्यत अबू लैला थी। उनका सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू सालिम बिन ग़नम बिन औफ़ से था। आप की माता का नाम जमीला बिन्त उबय्य था जो अब्दुल्लाह बिन अबुय्य बिन सलूल की बहन थीं। आप की एक बेटी थीं जिनका नाम फ़ुसुहुम था। आप जंगे बदर, उहद और ख़ंदक़ सहित सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का भाईचारा हज़रत शुजाअ बिन वह़ब अल्असदी रज़ि से करवाई। हज़रत औ़स बिन ख़ौ़ली की गिनती कामेलीन में होती थी। जाहलियत और इस्लाम के आरम्भ में कामिल उस शख़्स को कहा जाता था जो अरबी लिखना जानता हो। तीर अंदाज़ी करना अच्छी तरह जानता हो और तैराकी जानता हो। अच्छी तरह तैरना जानता हो। ये तीन बातें इस में हों तो उस को कामिल कहते थे और ये सब बातें हज़रत औ़स बिन ख़ौ़ली में मौजूद थीं।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री अमूरे आमा जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 320 ओस बिन ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 409-410 ओस बिन ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत नअजीया बिन अअ्जम रिज़ रिवायत करते हैं कि जब हुदैबिया के मौक़ा पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पानी की कमी की शिकायत की गई तो उन्होंने मुझे बुलाया और अपनी तरकश में से एक तीर निकाला और मुझे दिया। फिर कुऐं का पानी एक डोल में मंगवाया। मैं उस को लेकर आया। आप ने वुज़ू फ़रमाया और कुल्ली कर के डोल में उंडेल दिया जबकि लोग सख़्त गर्मी की हालत में थे। मुसलमानों के पास एक ही कुँआं था क्योंकि मुशरिकीन बलुदह के स्थान पर जल्दी पहुंच कर उस के पानी के ज़ख़ीरों पर क़ब्ज़ा कर चुके थे। फिर आप ने मुझे फ़रमाया कि इस डोल को कुएं में उंडेल दो जिसका पानी ख़ुशक हो गया है और इस के पानी में तीर गाड़ दो तो मैंने ऐसा ही किया। अत: क़सम है इस हस्ती की जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है मैं बहुत मुश्किल से बाहर निकला अर्थात फ़ौरी तौर पर वहां पानी उबलने लग गया ,फूटने लग गया। मुझे पानी ने हर तरफ़ से घेर लिया था और पानी ऐसे उबल रहा था जैसे हांडी उबलती है यहां तक कि पानी बुलंद हुआ और किनारों तक बराबर हो गया। लोग उस के किनारे से पानी भरते थे यहां तक कि उनमें से आख़िरी शख़्स ने भी प्यास बुझा ली। इस दिन मुनाफ़िक़ों का एक गिरोह वहां पानी पर था जिनमें अब्दुल्लाह बिन उबय्य भी था जो हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि का मामूं था। हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि ने उसे कहा कि ए अबुल हुबाब! हलाकत हो तुझ पर। अब तो तू इस चमत्कार को मान ले जिस पर तो ख़ुद मौजूद है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई को मान ले। क्या उस के बाद कोई गुंजाइश रह गई है? तो उसने जवाब दिया में इस जैसी बहुत सी चीज़ें देख चुका हूँ तो उस को हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि ने कहा कि अल्लाह तेरा बुरा करे और तेरी राय को बुरा साबित कर दे। अब्दुल्लाह बिन उबय्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे अबुल हुबाब! आज जो तूने देखा है इस जैसा पहले कब देखा था ? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी ख़बर पहुंची तो आप ने पूछा। उसने कहा कि मैंने पहले कभी नहीं देखा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर वह बात तुम ने क्यों कही अर्थात जो अपने भांजे को कही थी। अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि इस्तिग़फ़रुल्लाह। अब्दुल्लाह बिन उबय्य के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने निवेदन क्या हे रसूलुल्लाह! उनके लिए मग़फ़रत की दुआ कीजिए। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मग़फ़िरत की दुआ की।

(सबलुल हुदा जिल्द 5 पृष्ठ 41 बाब फ़ी जंगे अलहुदैबिया प्रकाश दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1993 ई)(इमताउल असमाअ जिल्द 1 पृष्ठ 284 बाब मक़ालतुल मुनाफ़क़ीन फ़ी दलीलुल नबुव्वत प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1999ई)

हज़रत अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उमरा के लिए मक्का जाने का इरादा फ़रमाया तो आप ने औ़स बिन ख़ौली रजि और अबू राफ़िअ रज़ि को हज़रत अब्बास रज़ि की तरफ़ पैग़ाम देकर भेजा कि वह हज़रत मैमोनह रज़ि की शादी आप से करवा दें। रास्ते में इन दोनों के ऊंट खो गए। वे कुछ दिन बतने राबिग़ अर्थात राबिग़ जो जुहफ़ह से दस मील की दूरी पर स्थित है वहां रुके रहे । यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए। फिर इन दोनों को उनके ऊंट मिल गए। फिर वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही मक्का गए। आप ने हज़रत अब्बास रज़ि के पास पैग़ाम भेजा। हज़रत मैमूनह रज़ि ने अपना मामला हज़रत अब्बास रज़ि के सपुर्द कर दिया था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अब्बास रज़ि के हाँ तशरीफ़ ले गए और हज़रत अब्बास रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत मैमूनह रज़ि की शादी करा दी।

(शरह अल्लामा जरक़ानी जिल्द 4 पृष्ठ 423 मैमोन उम्मुल मोमनीन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)(मुअजमुल बुलदान जिल्द 3 पृष्ठ 12 राबिग़ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि से कहा कि मैं आप को अल्लाह की क़सम देता हूँ कि हमें भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सम्मिलित कर लें। अत: हज़रत अली ने आप को इजाज़त दी।

इस की एक दूसरी रिवायत इस तरह मिलती है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और आप को नहलाने देने का इरादा किया गया तो अन्सार आए और उन्होंने यह कहा कि अल्लाह की कसम !हम लोग आप के ननहाल वाले हैं। अत: हम में से भी किसी को आप के पास हाज़िर होना चाहिए, अर्थात कि अंसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ननहाल वाले हैं। अंसार से कहा गया कि तुम लोग अपने में से किसी एक आदमी पर सहमति कर लो। कोई एक आदमी मुक़र्रर कर दो । तो उन्होंने हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि पर इत्तिफ़ाक़ किया। वह अंदर आए और आप के नहलाने और दफन करने में सम्मिलित रहे अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुसल और तदफ़ीन में सम्मिलित रहे। हज़रत औस मज़बूत आदमी थे। इसलिए पानी का घड़ा अपने हाथ में उठा कर लाते थे और इस तरह पानी मुहैया करते रहे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 320 औस बिन ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(इसाबा जिल्द 1 पृष्ठ 299 औस बिन ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ि, हज़रत फ़ज़ल बिन अबासओ उनके भाई क़ुसम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए गए ग़ुलाम शुक़रअन और हज़रत औ़स बिन ख़ौली रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र में उतरे थे। (सुंन इब्न माजा किताब अलजनाइज़ बाब ज़िक्र वफ़ाता-ओ-दफ़नह हदीस 1628)अर्थात लाश कब्र के अंदर रखने के लिए।

हज़रत औस बिन ख़ौली रज़ि से रिवायत है कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप ने फ़रमाया हे औस रज़ि! जो अल्लाह तआला के लिए विनय और विनम्रता धारण करता है अल्लाह तआला उस के स्तर बढ़ाता है और जो अहंकार करता है अल्लाह तआला उस को अपमानित करता है।

(मारफ़तुल सहाबा ले अबी नईम जिल्द 1 पृष्ठ 279 मन इस्महो औस हदीस 975 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

अत: यह बहुत ज़रूरी शिक्षा है जो हमें हमेशा याद रखना चाहिए। आप की वफ़ात मदीना में हज़रत उसमान रज़ि के ख़िलाफ़त के समय में हुई।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 321 औस बिन ख़ौली प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अल्लाह तआला इन सब बुज़ुर्ग सहाबा के दर्जात बुलंद फ़रमाता जाए।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलों और नबियों की यह शान नहीं होती कि उन पर जादू का कुछ असर हो सके।

जब ख़ादिम का यह मुक़ाम है तो आक़ा के बारे में यह ख़्याल करना कि आप नऊज़-बिल्लाह एक यहूदी के हपनाटीज़म का निशाना बन गए थे किस तरह क़बूल किया जा सकता है?

क़ुरआन मजीद नबियों पर जादू के क़िस्सा को दूर से ही धक्के देता है, रद्द कर देता है। इंसानी अक्ल इसे क़बूल करने से इनकार करती है। हदीस के शब्द इस व्याख्या को झुटलाते हैं जो इस पर मढ़े जा रहे हैं। और ख़ुद सरवरे कायनात अफ़ज़लुर्रसूल का उच्च मुक़ाम जादू वाले क़िस्सा की धज्जियां बिखेर रहा है।

आँख बंद कर के बुख़ारी और मुस्लिम को मानते जाना यह हमारे तरीका के ख़िलाफ़ है।

जो हदीस क़ुरआन करीम के ख़िलाफ़ ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस्मत के ख़िलाफ़ हो उस को हम कब मान सकते हैं?कोई हदीस क़ुरआन करीम या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस्मत और पवित्रता से टकराती है तो वह रद्द करने के योग्य है या उस की कुछ और व्याख्या है ।

मालूम नहीं उन लोगों को क्या हो गया है कि जिस मासूम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारे नबी शैतानके छूने से पाक समझते आए हैं ये उनकी शान में ऐसे ऐसे शब्द बोलते हैं।

अलहमदु लिल्लाह कि हम ज़माने के इमाम को स्वीकार कर के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम तथा मर्तबा को भी समझने वाले हैं, पहचानने वाले हैं।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

क्या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किसी जादू का असर हुआ था?

आँ हज़रत की बरकातों वाली ज़ात पर यहूद की तरफ से किए जाने वाले जादू की शंका को दूर करना,इस की हक़ीक़त और जमाअत अहमदिया के दृष्टि कोण का विस्तार से वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 मार्च 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत क़ैस बिन मिहसन अन्सारी सहाबी थे। कुछ रिवायात में उनका नाम क़ैस बिन हिसन भी वर्णन हुआ है। उनका सम्बन्ध अंसार के क़बीला बनू ज़ुरैक़ से था। उनकी माता का नाम अनीसह बिन्त क़ैस था और पिता मिहसन बिन ख़ालिद थे। आप जंगे बदर और उहद में सम्मिलित हुए। आप की एक बेटी उम्मे सअद बिन्त क़ैस थीं। जब आप फ़ौत तो आपकी औलाद मदीना में थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 04 पृष्ठ 422 क़ैस बिन मिहसन , दारुलकुतब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 443 क़ैस बिन मिहसन , दारुलकुतब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

दूसरे सहाबी हैं हज़रत ज़ुबैर बिन अयास। अयास बिन ख़ालिद उनके पिता का नाम था। यह जंगे बदर में शामिल हुए। उनका सम्बन्ध क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू ज़ुरैक़ से था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने कहा कि आप का नाम ज़ुबैर बिन इलयास था और एक दूसरी रिवायत में आपका नाम जब्र बिन इयास भी वर्णन हुआ है।

(अत्तबक़ातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 444 ज़ुबैर बिन ईयास , दारुलकुतब अल्इलमिया बेरूत1990 ई)

हदीसों में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नऊज़ बिल्लाह किसी यहूदी ने जादू कर दिया था जिसका आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर असर हो गया था और रिवायात में आता है कि कंघी और बालों पर वह जादू कर के ज़रवान कुँएं में डाल दिया था और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाद में उनको वहां से जा कर निकाला। सही बुख़ारी की शरह फ़तहुल बारी में है कि वह कंघी और बाल हज़रत ज़ुबैर बिन इयास ने ज़रवान कुँएं से निकाले थे और एक और रिवायत के अनुसार हज़रत क़ैस बिन मिहसन ने निकाले थे ।

(फ़तहुल बारी इमाम इब्न हिज्र किताब अत्तिब बाब अलसेहर हदीस 5763जिल्द 10 पृष्ठ 282 क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

इसलिए इन दोनों सहाबा का ज़िक्र मैंने इकट्ठा किया है। उन में से जिस ने भी ये चीज़ें निकाली थीं ये बात इतनी अहम नहीं है। असल बात ये है कि क्या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किसी जादू का असर हुआ था? इस की हक़ीक़त क्या है? इस बात पर हमारा दृष्टिकोण क्या है? और यह हमें पता होना चाहिए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात पर जिस बात से भी एतराज़ पैदा हो सकता है या लोग एतराज़ करते हैं हम ने जवाब देना है। इसलिए मैं इस की कुछ विस्तार वर्णन करता हूँ जो जमाअत के लिट्रेचर में मौजूद है। इन दोनों सहाबा के हवाला से आज इस बात की वज़ाहत होगी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने सूरत फ़लक़ की तफ़सीर के परिचय में इस घटना का ज़िक्र फ़रमाते हुए वर्णन फ़रमाया।

आप सूरत के बारे में वर्णन फ़र्मा रहे हैं कि "कुछ लोगों का ख़्याल है कि सूरत अलफ़लक़ और अन्नास ये आख़िरी दोनों सूरतें मक्का में नाज़िल हुईं। कुछ उनको मदनी सूरतें कहते हैं अर्थात मदीना में नाज़िल हुईं। आप लिखते हैं कि जो लोग इस बात के हक़ में हैं कि ये सूरत मदनी है उनकी दलील ये है कि इस सूरत और इस के बाद की सूरत का सम्बन्ध नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बीमारी के साथ है जिस में यह समझा गया था कि यहूद की तरफ़ से आप पर जादू किया गया है। इस वक़्त ये दो सूरतें नाज़िल हुईं और आप ने उनको पढ़ कर फूँका। ये आप वर्णन फ़र्मा रहे हैं कि यह कहा जाता है और मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि चूँकि यह घटना मदीना में हुई था इसलिए सूरत अलफ़लक़ और सूरत अन्नास मदनी हैं।

बहरहाल प्राथिमकता उसी को दी गई है कि ये दोनों सूरतें मदनी हैं अर्थात मदीना में नाज़िल हुईं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि यह लिखते हैं कि यह मुफ़स्सिरीन का एक इस्तिदलाल है। तारीख़ी गवाही नहीं। यद्यपि हमारे पास भी ऐसी कोई यक़ीनी शहादत नहीं कि जिसकी बिना पर हम कह सकें कि यह मक्की सूरत है। मगर जो इस्तिदलाल किया गया है वह भी बेकार है फ़ुज़ूल किस्म का यह इस्तिदलाल है क्योंकि चाहे यह सूरत मक्का में नाज़िल होती तब भी तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमारी के मौक़ा पर इस को पढ़ कर अपने ऊपर फूंक सकते थे। अत: केवल फूँकने से यह समझना कि ये मदीना में नाज़िल हुई थी यह इस्तिदलाल दरुस्त नहीं। .....रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बीमार होना और लोगों का यह समझना कि आप पर यहूदीयों की तरफ़ से जादू किया गया है यह घटना जिन शब्द में रिवायत की गई है वे शब्द ये हैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने यह शब्द उसी सूरत के तआरुफ़ में वर्णन करते हुए लिखे। आप लिखते हैं कि ..... चूँकि मुफ़स्सिरीन ने हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा की रिवायत को प्राथमिकता दी है इसलिए हम सिर्फ उसी रिवायत का अनुवाद करते हैं। हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यहूदीयों की तरफ़ से जादू किया गया और इस का असर यहां तक हुआ कि आप कई बार यह समझते थे कि आप ने अमुक काम किया है हालाँकि वह काम नहीं किया होता था। एक दिन या एक रात रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से दुआ की। फिर दुआ की और फिर दुआ की। फिर फ़रमाया: हे आयशा! अल्लाह तआला से जो कुछ मैंने मांगा था वह उसने मुझे दे दिया। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह कहती हैं कि मैंने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल वह क्या है। जो आप ने मांगा था ? क्या दिया है अल्लाह तआला ने आप को ? तो आप ने फ़रमाया कि मेरे पास दो आदमी आए। एक मेरे सिर के पास बैठ गया और दूसरा मेरे पांव के पास। फिर वे आदमी जो मेरे सिर के पास बैठा हुआ था उसने पांव के पास बैठने वाले को मुख़ातब कर के कहा या शायद यह फ़रमाया (हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह फ़रमाती हैं या यह कहा) कि पांव के पास बैठने वाले ने सिर के पास बैठने वाले को मुख़ातब करते हुए कहा कि इस आदमी (अर्थात मुहम्मद रसूलुल्लाह) को क्या तकलीफ़ है? तो दूसरे ने जवाब दिया कि जादू किया गया है। उसने कहा कि किस ने जादू किया है? तो उसने जवाब दिया कि लबीद बिन अल्असम यहूदी ने। तब पहले ने कहा कि किस चीज़ में जादू किया गया है? तो दूसरे ने जवाब दिया कि कंघी और सिर के बालों पर जो खजूर के गुच्छा के अंदर हैं। पहले ने पूछा ये चीज़ें कहाँ हैं? तो दूसरे ने कहा यह ज़ी अरवान के कुएं में हैं। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह कहती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के बाद अपने सहाबा सहित इस कुएं के पास तशरीफ़ ले गए। फिर वापस आए तो फिर फ़रमाया हे आयशा! अल्लाह की क़सम!! कुएं का पानी इस तरह मालूम होता था जैसे मेहंदी के निचोड़ की तरह लाल होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने आगे उस की व्याख्या लिखी है कि (मालूम होता है कि यहूदीयों में यह रिवाज था कि जब वे किसी पर जादू टोना करते थे तो मेहंदी या उसी किस्म की कोई और चीज़ पानी में डाल देते थे यह ज़ाहिर करने के लिए कि यह जादू के ज़ोर से पानी को लाल किया गया है)एक ज़ाहिरी चालाकी वे किया करते थे सादा लोगों को बहकाने के लिए और वहां फिर आप ने फ़रमाया और वहां की खजूरें ऐसी थीं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जैसे शयातीन अर्थात साँपों के सिर(इस में खजूर के गुच्छों को साँपों के सिरों के साथ तुलना दी गई है अर्थात खजूरें गुच्छे वाली थीं।) हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह कहती हैं मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल! आप ने इस चीज़ को जिस पर जादू किया गया था जला क्यों ना दिया? रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मुझे जब अल्लाह तआला ने शिफ़ा दे दी तो मैंने नापसन्द किया कि कोई ऐसी बात करूँ जिस से बुराई पैदा हो .....इसलिए मैंने हुक्म दिया कि इन चीज़ों को दफ़न कर दिया जाए। अत: उनको दबा दिया गया है। हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा की रिवायत में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि जिन दो मर्दों का ज़िक्र आता है कि वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। मालूम होता है कि वे दो फ़रिश्ते थे जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिखाए गए। अगर वे इन्सान होते तो हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा को भी नज़र आ जाते। आप फ़रमाते हैं रिवायत जो हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा से वर्णन की गई है इस का सिर्फ इतना मतलब है कि अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रिश्तों के द्वारा से ख़बर दी कि यहूदियों ने आप पर जादू किया हुआ है इस का यह मतलब नहीं कि जिस तरह जादू का असर स्वीकार किया जाता है इसी तरह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जादू का असर हो भी गया था। फिर आप कहते हैं कि बहरहाल .....जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके जादू टोने की चीज़ें निकाल कर ज़मीन में दफ़न कर दीं तो यहूदियों को ख़्याल हो गया कि उन्होंने जो जादू किया था वो समाप्त हो गया है ख़त्म हो गया। उधर अल्लाह तआला ने आप को सेहत भी प्रदान कर दी। बात का सारांक्ष यह कि यहूदी यह यक़ीन रखते थे कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जादू कर दिया है। इस वजह से तिब्बी तौर पर उनका ध्यान इस तरफ़ हो गया कि आप बीमार हो जाएं। आप लिखते हैं कि .....इस रिवायत से जहां यहूदियों के इस द्वेष का पता चलता है जो उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से था वहां ये बात भी स्पष्ट हो जाती है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के सच्चे रसूल थे क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ़ से आप को इन सारी बातों का इलम दे दिया गया जो यहूदी आप के ख़िलाफ़ कर रहे थे। अत: आप को ग़ैब की बातों का मालूम हो जाना और यहूदीयों का अपने मक़सद में नाकाम रहना आप के सच्चा रसूल होने की स्पष्ट और साफ दलील है।

(तफ़सीर कबीर जिल्द 10 पृष्ठ 539 से 542)

बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने जिस तरह नतीजा निकाला है वही हक़ीक़त है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यहूदियों ने अपने विचार में जादू किया लेकिन इस का कोई असर नहीं हुआ और बीमारी जो भूलने की बीमारी थी या जो भी बीमारी थी उस के कुछ और कारण हो सकते हैं लेकिन अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यहूदियों की इस कार्रवाई से सूचित कर ज़ाहिरी तौर पर भी उनका जो ख़्याल था कि उन्होंने जादू किया है इस को भी नाकाम कर दिया और यहूदी जो आप की बीमारी को देखकर अपने विचार में ख़ुश हो रहे थे या यह मशहूर कर दिया था, ये बातें करते थे कि हमारे जादू का असर है जो यह बीमारी चल रही है इस की हक़ीक़त ज़ाहिर हो गई।

फिर हमारे लिट्रेचर में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि का एक लेख है, जिस में इस घटना पर विस्तार से तारीख़ी और ज्ञान वर्धक बहस हुई है और जो इस घटना को और अधिक स्पष्ट करती है। आप लिखते हैं कि

तारीख़ बल्कि हदीसों तक में वर्णन हुआ है कि सुलह हुदैबिया के बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नऊज़ बिल्लाह एक बार एक यहूदी नस्ल मुनाफ़िक़ ने जिसका नाम लबीद बिन अल्आसम था जादू कर दिया था (या जादू कर दिया था।) और यह जादू इस तरह किया गया कि एक कंघी में बालों की गिरहें बांध कर और इस पर कुछ पढ़ कर उसे एक कुएं में दबा दिया गया। और कहा जाता है (आप फ़र्मा रहे हैं कि कहा जाता है) कि आप नऊज़ बिल्लालाह इस जादू में काफ़ी समय तक रहे। (यह मशहूर किया हुआ था उन्होंने।) इस समय में आप अक्सर समय उदास और दुखी रहते थे और घबराहट में बार-बार दुआ फ़रमाते थे और इस हालत का स्पष्ट पक्ष यह था कि आप को इन दिनों में बहुत ज़्यादा भूलने की बीमारी रहने लगी थी। (भूल जाते थे कुछ बातें)। यहां तक कि कई बार आप ख़्याल करते थे कि मैं यह काम कर चुका हूँ मगर दरअसल आप ने वह काम नहीं किया होता था। या कई बार आप यह ख़्याल फ़रमाते थे कि मैं अपनी अमुक बीवी के घर हो आया हूँ मगर वास्तव में आप उस के घर नहीं गए होते थे। (और इस की व्याख्या फ़रमाते हैं कि) इस सम्बन्ध में याद रखना चाहिए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह तरीक़ा था कि इस्लामी आदेशों के अनुसार आप ने अपनी बीवियों की बारी मुक़र्रर कर रखी थी और हर-रोज़ शाम को हर बीवी के घर जा कर ख़ैरीयत पूछते थे और अन्त में उस बीवी के घर पहुंच जाते थे जिसकी उस दिन बारी होती थी। ऊपर वाली रिवायत में इसी तरफ़ इशारा है। (बहरहाल यह रिवायत आगे चलती है।)अन्त में ख़ुदा तआला ने एक रोया के द्वारा से आप पर इस फ़ित्ना की हक़ीक़त खोल दी इत्यादि इत्यादि।

यह सार है जो पहले भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की तफ़सीर में वर्णन हो चुका है। यह बुख़ारी की रिवायत है जिसका सार आप ने वर्णन किया। फिर आप लिखते हैं कि यह इस रिवायत का सार है जो तारीख़ और हदीस की कुछ किताबों में वर्णन हुई है। इस रिवायत के आसपास ऐसे क़िस्सों का जाल बुन दिया गया है कि असल हक़ीक़त का पता लगाना मुश्किल हो गया है। (ऐसी कहानियां बना दी गई हैं इस रिवायत पर कि बहुत मुश्किल हो गया है कि हक़ीक़त किया है।) आप लिखते हैं। अगर सब रिवायतों को क़बूल किया जाए तो नऊज़ बिल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक और मुक़द्दस वजूद ऐसा साबित होता है

कि मानो (मेरे मुहं में मिट्टी) आप एक बहुत कमज़ोर तबीयत के इन्सान थे जिसे कम से कम दुनिया के मामलों में आप के बदबातिन दुश्मन अपने जादू से जिस तरह में चाहते थे ढाल सकते थे। और यह कि वे आप को अपनी नापाक तवज्जा का निशाना बना कर आप के दिल तथा दिमाग़ पर इस तरह प्रभाव जमाना शुरू कर देते थे कि आप नऊज़ बिल्लाह इस जादू के मुक़ाबला पर अपने आपको बेबस पाते थे। (अगर रिवायत को इस तरह वर्णन किया जाए जिस तरह हदीसों में, तारीख़ में वर्णन हुई है तो फिर तो यह नतीजा निकलता है जो बिल्कुल ग़लत नतीजा है। यह हो ही नहीं सकता।) लेकिन अगर इन रिवायतों के बारे में अक्ल से और नक्ल से ग़ौर किया जाए और रिवायतों की मुहक़्क़िक़ाना छानबीन की जाए, (तहक़ीक़ की जाए, बाक़ायदा रिसर्च की जाए) तो साफ़ साबित होता है कि यह सिर्फ एक भूलने की बीमारी थी जो कुछ अस्थायी फिकरों और शारीरिक कमाज़ोरी के नतीजा में आप को कुछ वक़्त के लिए हो गई थी जिससे कुछ बुरा चाहने वाले दुश्मनों ने फ़ायदा उठा कर यह मशहूर कर दिया कि हम ने नऊज़ बिल्लाह मुस्लमानों के नबी पर जादू कर दिया है मगर ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत जल्द सेहत देकर दुश्मनों के मुँह काले कर दिए और मुनाफ़िक़ों का झूटा प्रापेगंडा मिट्टी में मिल गया।

दुनिया भर में शैतानी ताक़तों का फ़ातहे-आज़म और अफ़ज़ल रसूल जिस से बढ़कर शैतानी ताकतों का सिर कुचलने वाला ना आज तक पैदा हुआ और ना भविष्य में होगा उस के बारे में यह समझना कि वह एक ज़लील यहूदी के बेटे के शैतानी जादू का निशाना बन गया था इंसानी अक्ल का बदतरीन इस्तिमाल है। (यह सोचा भी नहीं जा सकता) और यह सिर्फ़ हमारा दावा ही नहीं बल्कि ख़ुद सरवरे कायनात (मेरा नफ्स आप पर कुरबान) ने इस को रद्द फ़रमाया है।

इस का स्पष्टीकरण एक हदीस से होती है। हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! क्या मेरे साथ शैतान है? आप ने फ़रमाया हाँ। (हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने अपने बारे में पूछा मेरे साथ शैतान है? आप ने फ़रमाया हाँ।) मैंने पूछा क्या हर इन्सान के साथ शैतान लगा हुआ है तो आप ने फ़रमाया हाँ। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने हैरान हो कर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! क्या आप के साथ भी कोई शैतान लगा हुआ है? आप ने फ़रमाया हाँ। मगर ख़ुदा ने मुझे शैतान पर ग़लबा प्रदान फ़रमाया है यहां तक कि मेरा शैतान भी मुस्लमान हो चुका है।

(सही मुस्लिम किताब सिफ़तुल क़ियामत बाब तहरीश अश्शैतान)

क्या इस स्पष्ट और ख़ुले ख़ुले इरशाद के होते हुए यह ख़्याल किया जा सकता है कि किसी यहूदी मुनाफ़िक़ ने जो क़ुरआन की दृष्टि से एक मग़ज़ूब अलैहि क़ौम भी है अपने शैतान की मदद से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसे बलंद मर्तबा इन्सान पर जादू कर दिया होगा। और आप उस शैतानी जादू से प्रभावित हो कर लम्बे समय तक परेशान और दुखी और बीमार रहे?

झूठो लोग हक़ के मुक़ाबिल पर हर ज़माना में ऐसे बातिल और झूटे तरीके इस्ति-माल करते रहे हैं। मगर सामर्थयवान ख़ुदा ऐसे सारे झूठों के पोल खोलता रहा है। जैसा कि वह फ़रमाता है : كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ (अलमुजादल:23) अर्थात ख़ुदा ने ये बात लिख रखी है और मुक़द्दर कर रखी है कि हर रसूल के ज़माना मैं और मेरे रसूल ग़ालिब रहेंगे और कोई शैतानी तरीका हमारे मुक़ाबला पर कामयाब नहीं हो सकता।

आप लिखते हैं कि फिर सवाल ये पैदा होता है कि इस घटना की हक़ीक़त क्या है जो सही बुख़ारी तक मैं हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह अन्हा की ज़बानी वर्णन हुआ है। अत: अगर घटना के क्रम और यहूदीयों और मुनाफ़िक़ों के तौर तरीक़ों को समक्ष रखकर ग़ौर किया जाए तो इस घटना की हक़ीक़त को समझना ज़्यादा मुश्किल नहीं रहता। सबसे पहले तो यह जानना चाहिए कि इस कथित जादू की घटना सुलह हुदैबिया के बाद की है। तबक़ात इब्न-ए-साद में यह लिखा है। जिस में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रोआ के आधार पर उमरा के उद्देश्य से मक्का तशरीफ़ ले जाने का फ़ैसला किया और वहां तशरीफ़ ले गए थे मगर रस्ता में क़ुरैश के रोकने के कारण से बज़ाहिर नाकाम लौटना पड़ा। यह ज़ाहिरी नाकामी एक ऐसा भारी सदमा थी कि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ने तो मज़ाक़ और तान से काम लेना ही था लेकिन कुछ मुख़लिस मुस्लमान यहां तक कि एक हदीस में आता है कि हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जैसे बुलंद स्तर के बुज़ुर्ग भी इस ज़ाहिरी नाकामी की वजह से वक़्ती तौर पर डगमगा गए थे। बुख़ारी में यह भी लिखा है। हज़रत उम्र की यह रिवायत बुख़ारी की हदीस है। इन हालात का कमज़ोर तबीयत के लोगों की परीक्षा के भय की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत पर कुदरती रूप से काफ़ी असर था और आप कुछ अर्से तक बहुत फ़िक्रमंद रहे और लाज़िमन इस फ़िक्र का असर आप की सेहत पर भी पड़ा और आप इस घबराहट में ख़ुदा के हुज़ूर कसरत से दुआएं भी फ़रमाते थे जैसा कि हदीस के शब्द दआ व दआ इत्यादि में इशारा है ताकि सुलह हुदैबिया के घटना की वजह से इस्लाम की तरक़्क़ी में कोई वक़्ती रोक पैदा ना हो। यह इसी किस्म की दुआ थी जैसा कि आप ने बदर के मैदान में ख़ुदा तआला की तरफ़ से कामयाबी का वाादा होने के बावजूद दुश्मन की ज़ाहिरी ताक़त को देखकर फ़रमाया था कि اَللّٰهُمَّ اِنْ تَهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ لَا تُعْبَدُ فِي الْاَرْضِ

इन कारणों से आप के शरीर और आप की स्मरण शक्ति पर काफ़ी असर पड़ा हुआ था और आप कुछ अरसा के लिए भूलने की बीमारी में पीड़ित हो गए थे। (कुछ रिवायतों में तो दो-चार दिन ही हैं या दो दिन हैं या एक दिन और एक रात है लेकिन बहरहाल जो भी जितने भी दिन थे। कुछ असर पड़ा जो एक अनिवार्य बात है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने यह नतीजा निकाला है कि कुछ दिनों के लिए था और यह इस वजह से था जो आप को तफ़क्कुरात थे और मुसलमानों के ईमान में कमज़ोरी की वजह से भी आप को फ़िक्र थी।) यह एक लाज़िमा इन्सानी बात है जिससे ख़ुदा के नबी तक को छुट नहीं। जब यहूदीयों और मुनाफ़िक़ों ने ये देखा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आजकल बीमार हैं और शरीर कमज़ोर और दिमाग़ के थकावट की वजह से आप को भूलने की बीमारी हो गई है तो उन्होंने आदत के अनुसार फ़ित्ना के लिए से यह मशहूर करना शुरू कर दिया कि हम ने नऊज़ बिल्लाह मुसलमानों के नबी पर जादू कर दिया है और यह कि आप का यह भूलना इत्यादि (इसी जादू का नतीजा है) उसी जादू का नतीजा है। और उन्होंने अपने पुराने तरीक़ के अनुसार ज़ाहिरी अलामत के तौर पर एक कुँएं के अंदर किसी कंघी में बालों की गिरहें इत्यादि बांध कर उसे भी दबा दिया।

जब उनके इस कथित जादू की सूचना आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप ने इस फ़ित्ना को दूर करने के लिए ख़ुदा के हुज़ूर दुआ फ़रमाई (और जैसा कि हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने कहा है कि इस ख़बर के पहुंचने के बाद फिर आप ने एक दिन या एक रात बहुत शिद्दत से दुआ की) और अपने आसमानी आक़ा से मदद मांगी की कि वह इस फ़ित्ना को शुरु करने वाले के नाम और इस के कथित जादू के तरीक़ से आप को सूचित फ़रमाए ताकि आप इस झूठे जादू का तार बिखेर सकें। अत: ख़ुदा ने आप की दुखी दिल की दुआओं को सुना और रोया के द्वारा से आप पर असल हक़ीक़त खोल दी।

क़ुरआन के उसूली इरशाद कि لَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى (ताहा:70) (अर्थात नबियों के मुक़ाबिला पर कोई जादू किसी सूरत में भी कामयाब नहीं हो सकता चाहे वह किसी रंग में और किसी तरीके से हमला कर रहा हो) फिर क़ुरआन के इस स्पष्ट फ़ैसले की रोशनी में कि يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (बनीइस्राईल:48) कि ज़ालिम लोग कहते हैं कि तुम केवल एक ऐसे शख़्स की पैरवी कर रहे हो जिस पर जादू हुआ है। क़ुरआन करीम में लिखा है काफ़िरों ने यही कहा था। फिर ख़ुद इस हदीस के शब्द और वर्णन का अंदाज़ और अरब के मुहावरा पर ध्यान देने के नतीजा में बुख़ारी की यह रिवायत यक़ीनन हिकायत अनिल ग़ैर के रंग में समझी जाएगी। हिकायत अनिल ग़ैर का मतलब यह है कि बज़ाहिर बात करने वाला अपनी तरफ़ से बात करता है मगर वास्तव में मुराद यह होती है कि दूसरे लोग यह कहते हैं। दूसरे की बात वर्णन की जाती है। इस तरह इस रिवायत का अनुवाद यह बनता है कि हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह रिवायत करती हैं कि एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया(अर्थात दुश्मनों ने मशहूर कर दिया कि आप को जादू कर दिया गया है) हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने ख़ुद नहीं कहा। इस का अनुवाद इस तरह बनेगा कि दुश्मनों ने ही मशहूर कर दिया कि आप को जादू कर दिया गया है यहां तक कि इन दिनों में आप कई बार ख़्याल फ़रमाते थे कि आप ने अमुक काम किया है हालाँकि वास्तव में नहीं किया होता था और एक रिवायत में यह है कि आप कई बार ख़्याल करते थे कि अपनी अमुक बीवी के घर हो आया हूँ हालाँकि आप उनके घर में नहीं गए होते थे। इन्ही दिनों में हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह की वज़ाहत के अनुसार आप एक दिन मेरे मकान में थे और आप घबराहट में बार-बार ख़ुदा के हुज़ूर दुआ फ़रमाते थे। इस दुआ के बाद आप ने मुझसे फ़रमाया कि हे आयशा! क्या तुझे मालूम है कि अल्लाह तआला ने मुझे वह बात बता दी है जो मैंने इस से पूछी थी? मैंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल !वह क्या बात है? आप ने फ़रमाया (ख़्वाब में) मेरे पास दो

आदमी आए (या कश्फ़ के रंग में।) उनमें से एक मेरे सिर की तरफ़ बैठ गया और दूसरा पांव की तरफ़ बैठ गया। फिर उन में से एक ने दूसरे को पूछा कि इस आदमी को क्या तकलीफ़ है? हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि अल्लाह लिखते हैं कि अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू भी हिकायत अनिल ग़ैर का है, दूसरे के हवाले से बात करने की तरफ़ इशारा कर रहा है और फिर वही लंबी बात जो पहले वर्णन हो चुकी है कि इस को तकलीफ़ यह है कि अमुक यहूदी ने जादू किया है और लोग यह कहते हैं कि इस का असर है। फिर हज़रत आयशा रजि अल्लाह कहती हैं कि इस ख़्वाब के बाद या उस कशफ़ के बाद आप अपने कुछ सहाबा के साथ उस कुँएं पर तशरीफ़ ले गए और इस का मुआइना फ़रमाया। इस पर ख़जूरों के कुछ दरख़्त उगे हुए थे (अर्थात वह अंधा कुँआं था) ।फिर आप हज़रत आयशा के पास वापस तशरीफ़ लाए और उनसे फ़रमाया आयशा ! मैं उसे देख आया हूँ। इस कुँएं का पानी मेहंदी के पानी की तरह लाल रंग वाला हो रहा है (यहूदीयों का तरीक़ था कि लोगों की नज़रों को धोखा देने के लिए जैसा कि वर्णन हो चुका है ऐसे कुएं के पानी को रंग देते थे) और इस के खजूर के दरख़्त, थूहर के दरख़्तों की तरह मकरूह नज़र आते थे। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि आप ने इस कंघी इत्यादि को बाहर निकाल कर फेंक क्यों नहीं दिया? कुछ में आता है कि जला क्यों नहीं दिया? आप ने फ़रमाया ख़ुदा ने मुझे महफ़ूज़ रखा और मुझे शिफ़ा (तंदरुस्ती) दे दी तो फिर मैं उसे बाहर फेंक कर लोगों में एक बुरी बात का चर्चा क्यों करता? (जिस से कमज़ोर तबीयत के लोगों में जादू की तरफ़ अपने आप ध्यान पैदा होने का अंदेशा था) अत: इस कुँएं को दफ़न कर के बंद करवा दिया गया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि याद रखना चाहिए कि हिकायत अनिल ग़ैर (अर्थात दूसरों के हवाले से जब बात की जाती है या दूसरों की बात को आगे वर्णन किया जाता है) इस का तरीक़ा अरबों में जारी था बल्कि ख़ुद क़ुरआन करीम ने भी कुछ जगह इस तरह से बात करने के तरीके को धारण किया है। अत: एक जगह दोज़ख़ियों को सम्बोधित कर के ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि ذُقْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ (अद्दुख़ान:50) कि अर्थात हे जहन्नुम में डाले जाने वाले शख़्स!तो ख़ुदा के इस अज़ाब को चख। बेशक तो बहुत इज़्ज़त वाला और बड़ा शरीफ़ इन्सान है।

इस जगह यह अभिप्राय हरगिज़ नहीं कि नऊज़ बिल्लाह ख़ुदा दोज़ख़ियों को सम्मान्नीय और शरीफ़ ख़्याल करता है बल्कि हिकायत अनिल ग़ैर के रंग में मुराद यह है कि हे वे इन्सान जिसे उस के साथी और वे ख़ुद सम्मान्नीय और शरीफ़ ख़्याल करते थे (दुनिया में ग़लत काम करने के बाद समझते थे हम बहुत मुअज़्ज़िज़ हैं) तो अब ख़ुदा के आग के अज़ाब का मज़ा चख। इसी तरह यही तरीका रोया में इन दो आदमीयों या दो फ़रिश्तों ने धारण किया जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस रोया में नज़र आए थे। अत: उन्होंने जब यह कहा कि इस शख़्स को जादू किया गया है तो उनकी मुराद यह नहीं थी कि हमारे ख़्याल में जादू किया गया है मगर मुराद यह थी कि लोग कहते हैं कि उसे जादू किया गया है। और ख़ाब का वास्तविक उद्देश्य इस के सिवा कुछ नहीं थी कि जो चीज़ उन ख़बीसों ने छुपा कर इस कुएं में रखी हुई थी और इस के द्वारा वे अपने साथ वाले लोगों को धोखा देते थे। (अपने जैसे लोगों को धोखा देते थे, मशहूर कर रहे थे, मुनाफ़िक़ों में बातें फैला रहे थे) ,उसे ख़ुदा अपने रसूल पर ज़ाहिर कर देता उनके कथित जादू को मालिया-मेट कर दिया जाए। अत: ऐसा ही हुआ कि उनके जादू का माध्मय सपुर्द-ए-ख़ाक कर दिया गया और कुँएं को पाट दिया गया। और उस के नतीजा में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत का यह फ़िक्र भी कि ये लोग इस किस्म की शरारतें कर के सादा-मिज़ाज लोगों को धोखा देना चाहते हैं समाप्त हो गया और यह ख़ुदा तआला का वाादा बड़ी शान के साथ पूरा हुआ कि لَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى (ताहा:70) अर्थात एक जादूगर चाहे कोई सा तरीक़ धारण करे वह ख़ुदा के एक नबी के मुक़ाबला पर कभी कामयाब नहीं हो सकता।

बहरहाल ऊपर वाली हदीस से नीचे लिखी बातें साबित होती हैं:

यह कि सुलह हुदैबिया के घटना के बाद जिसकी वजह से क़ुदरती आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरों के ठोकर खाने के ख़्याल से काफ़ी फ़िक्रमंद थे और आप कई दुनयावी बातें जो घरेलू मामलों से सम्बन्ध रखती थीं भूल जाते थे।

दूसरे आप की इस हालत को देखकर यहूदीयों और मुनाफ़िक़ों ने जो हमेशा ऐसी बातों की आड़ लेकर इस्लाम और इस्लाम के मुक़द्दस संस्थापक को बदनाम करना चाहते थे यह छुपी चर्चा शुरू कर दी कि हम ने नऊज़ बिल्लाह मुसलमानों के नबी पर जादू कर दिया है। उनकी यह चर्चा ऐसी ही था जैसा कि उन्होंने जंगे बनी मुस्तलक़ में हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा के पीछे रह जाने की वजह से हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह को बदनाम करना शुरू कर दिया था और इस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी कष्टदायक करने की नापाक कोशिश की थी।

तीसरे यह कि इस कथित जादू की ज़ाहिरी निशानियों के तौर पर ताकि सादा तबा लोगों को ज़्यादा आसानी से धोखा दिया जा सके इन ख़बीस फ़ित्रत लोगों ने एक यहूदी नस्ल मुनाफ़िक़ लबीद बिन अलअसम के द्वारा अपने तरीक़ के अनुसार एक कंघी में कुछ बालों की गिरहें बांध कर उसे कुएं में दबा दिया और छुपे हुए तरीके से गपशप शुरू हो गई जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की और परेशानी का कारण हुई।

चौथी बात यह कि इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा के हुज़ूर व्याकुलता के साथ दुआएं कीं कि हे ख़ुदा तू अपने फ़ज़ल से इस फ़ित्ना को दूर फ़र्मा और मुझ पर इस की हक़ीक़त को खोल दे ताकि में इस फ़ित्ना को दूर के के सादा-मिज़ाज लोगों को ठोकर से बचा सकों। अत: वह क़ुबूलियते दुआ ज़ाहिर हो गया।

पांचवें यह कि ख़ुदा तआला ने आप की इन दुआओं को सुना और लबीद बिन अलअसम की शरारत का पोल खोल दिया जिस पर आप कुछ गवाहों के साथ इस कुएं पर तशरीफ़ ले गए और इस कंघी को सपुर्दे ख़ाक कर दिया बल्कि कुएं तक को पाट दिया ताकि ना रहे बाँस ना बजे बाँसुरी।

अन्त में यह सवाल रह जाता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो ख़ुदा तआला के एक महान नबी बल्कि सब नबियों से अफ़ज़ल और ख़ात्मुल अंबिया थे आप को भूलने की बीमारी क्यों हुई जो बज़ाहिर नबुव्वत के फ़राइज़ की अदायगी में रुकावट का कारण हो सकता है? तो इस के जवाब में अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि हर नबी की दोहरी हैसियत होती है। एक पहलू के लिहाज़ से ख़ुदा का नबी और रसूल होता है जिसकी वजह से वह ख़ुदा के कलाम से सम्मानित होता है और धार्मिक बातें में अपने अनुयायियों का उस्ताद क़रार पाता है और उनके लिए आदर्श बनता है और दूसरे पहलू के लिहाज़ से वे इन्सानों में से एक इन्सान होता है और सारी उन इन्सानी बातों और तिब्बी ख़तरात के अधीन होता है जो दूसरे इन्सानों के साथ लगे हुए हैं। इसी लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुख़ातब कर के फ़रमाया है قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰى اِلَيَّ (अल्कहफ़:111) अर्थात हे रसूल !तो लोगों से कह दे कि मैं तुम्हारी तरह का एक इन्सान हूँ (और सारे उन नियमों के अधीन हों जो दूसरे इन्सानों के साथ लगे हुए हैं)हाँ मैं यक़ीनन ख़ुदा का एक रसूल भी हूँ और ख़ुदा की तरफ़ से मख़्लूक़े ख़ुदा की हिदायत के लिए वह्य तथा इलहाम से नवाज़ा गया हूँ। यह उस का तफ़सीरी अनुवाद है।

इस सुक्ष्म आयत में नबियों की दुहरी हैसियत को निहायत उम्दा तरीक़े पर वर्णन किया गया है। अर्थात उन्हें एक दृष्टि से दूसरे इन्सानों से उच्च किया गया है और दूसरी दष्टि से उनको दूसरे इन्सानों की सीमा से बाहर नहीं निकलने दिया गया। अत: जो शख़्स यह ख़्याल करता है कि नबी बशरी लवाज़मात और इन्सान के तिब्बी ख़तरात से ऊंचे होते हैं वे झूठा है। यक़ीनन नबी भी इसी तरह बीमार होते हैं जिस तरह कि दूसरे इन्सान बीमार होते हैं। हज़रत मियां बशीर अहमद साहिब ने लिखा है कि वे मलेरीया बुख़ार ,टाईफ़ाईड, (ज़मनन यहां ये भी याद रखना चाहिए कि ज़ाहिरी अलामात जो दर्ज हैं। हदीस और तारीख़ से पता चलता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मर्ज़ टाईफ़ाईड से फ़ौत हुए थे) सिल्ल,टी बी, दमा, नज़ला, खांसी, नक़रस, सिर की बीमारी,आसाबी तकलीफ़, ज़कावत हिस, घबराहट,बेचैनी ,दिमाग़ी कोफ़त, निस्यान, हादसों के नतीजा में चोटें और ज़ख़्म, लड़ाई की चोटें इत्यादि इत्यादि सब की सीमा में नबी आ सकते हैं और आते रहे हैं। सिवाए उस के कि किसी ख़ास नबी को ख़ुदा की तरफ़ से छूट के रूप में किसी ख़ास बीमारी से सुरक्षा का वाादा दिया गया हो । अगर इस जगह किसी को यह ख़्याल गुज़रे कि क़ुरआन तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाता है कि سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰى (अल्आला: 7)। (अर्थात हम तुझे एक ऐसी शिक्षा देंगे जिसे तो नहीं भूलेगा) तो उस के जवाब में अच्छी तरह याद रखना चाहिए कि यह वाादा सिर्फ़ कुरान की वह्य के बारे में है ना कि आम। और मुराद यह है कि हे रसूल! हम अपनी जो वह्य तुझ पर उम्मत की हिदायत के लिए नाज़िल करेंगे उसे तो नहीं भूलेगा और हम क़यामत तक उस की हिफ़ाज़त करेंगे। आम दैनिक बातों और सांसारिक कामों

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 11 April 2019 Issue No. 15

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

या धार्मिक कामों के बारे में यह वादा हरगिज़ नहीं है। अत: हदीस से साबित है कि आप कई अवसरों पर इन्सानी ज़रूरतों के अनुसार भूल जाते थे बल्कि हदीस में यहां तक आता है कि आप कई बार नमाज़ पढ़ाते हुए रकअतों की संख्या के बारे में भी भूल गए और लोगों के याद कराने पर याद आया। बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में यह हदीस मौजूद है। इसी तरह और कई अवसरों पर आप भूल जाते थे।

बल्कि हदीस में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपने बारे में फ़रमाया है कि اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ اَنْسٰی کَمَا تَنْسَوْنَ فَاِذَا نَسِیْتُ فَذَکِّرُوْنِیْ (अबू दाऊद किताबुस्सलात बाब अज़ा सल्ला ख़म्सा)अर्थात मैं भी तुम्हारी तरह का एक इन्सान हूँ और जिस तरह तुम कभी भूल जाते हो में भी भूल सकता हूँ। अत: अगर में किसी मामला में भूल जाया करूँ तो तुम मुझे याद दिला दिया करो।

अत: जिस तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी कभी आम और सामयिक भूल हो जाती थी इसी तरह सुलह हुदैबिया के बाद कुछ समय के लिए बीमारी के रंग में भूल हो गई थी। अत: यही वह व्याख्या है जो जादू वाली रिवायत के अनुसार रिवायत के सम्बन्ध में कुछ पिछले उल्मा ने की है। जैसे अल्लामा माज़री फ़रमाते हैं कि

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त पर बेशुमार पुख़्ता दलायल मौजूद हैं और आप के चमत्कार भी आप की सच्चाई पर गवाह हैं। बाक़ी आम दुनिया के उमूर जिनके लिए आप मबऊस नहीं किए गए थे अत: इस सम्बन्ध में यह एक बीमारी समझी जाएगा जैसा कि इन्सान को दूसरी बीमारीयां हो जाती हैं।

और अल्लामा इब्नुल क़सार फ़रमाते हैं कि

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो यह भूल की बीमारी हो गई थी तो यह बीमारीयों में से एक बीमारी थी जैसा कि हदीस के इन आख़िरी शब्द से ज़ाहिर है कि अल्लाह ने मुझे शिफ़ा दे दी है। (इस में वाज़िह तौर पर लिखा हुआ है।)

बात का सारांक्ष यह कि सुलह हुदैबिया के बाद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊपर वर्णन की गई हालत जिसे दुश्मनों के जादू का नतीजा क़रार दिया गया है वह हरगिज़ किसी जादू इत्यादि का नतीजा नहीं थी। बल्कि हालात के अधीन केवल भूलने की तकलीफ़ थी। भूलने की बीमारी थी जिसे कुछ फ़ित्ना फैलाने वाले लोगों ने रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात वाला सिफ़ात के ख़िलाफ़ प्रापेगंडे का माध्यम बना लिया। क़ुरआन मजीद नबियों पर जादू के क़िस्सा को दूर से ही धक्के देता है, रद्द कर देता है। इंसानी अक़्ल इसे क़बूल करने से इनकार करती है। हदीस के शब्द इस व्याख्या को झुठलाते हैं जो इस पर मढ़ी जा रही है। और ख़ुद सरवरे कायनात अफ़ज़ल रसूल का उच्च स्थान जादू वाले क़िस्सा की धज्जियां बिखेर रहा है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस बात का भी ज़िक्र किया है कि यह भी फ़ायदा से ख़ाली न होगा कि जैसा कि हज़रत ख़लीफ़ा सानी अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्लेहिल अज़ीज़ (उस वक़्त उन की ज़िन्दगी की बात कर रहे हैं) की रिवायत है। इस रिवायत के अनुसार सीरतुल महदी के हिस्सा अव्वल की रिवायत नंबर 75 में वर्णन है कि एक बार एक द्वैष रखने वाला हिंदू जो गुजरात का रहने वाला था कादियान आया था। और वो हेपनाटीज़म के जादू का बड़ा माहिर था। उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में हाज़िर हो कर आप पर ख़ामोशी के साथ ध्यान डालना शुरू किया ताकि आप से कुछ ग़लत हरकतें कर के आप को लोगों की हंसी का निशाना बनाए मगर जब आप ने इस पर तवज्जा डाली तो वह चीख़ मार कर भागा। और जब उस से पूछा गया कि तुम्हें यह क्या हुआ था तो उसने जवाब दिया कि जब मैंने मिर्ज़ा साहिब पर ध्यान डाला तो मुझे यूं नज़र आया कि मेरे सामने एक ख़ौफ़नाक शेर खड़ा है जो मुझ पर हमला करने वाला है और मैं उस से डर कर भाग निकला हूँ। तो आप लिखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक हैं, जब सेवक का यह स्थान है, इस पर अल्लाह तआला ने हेपनाटीज़म का असर नहीं होने दिया तो आक़ा के बारे में यह ख़्याल करना अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह ख़्याल करना कि आप नऊज़ बिल्लाह एक यहूदी के हेपनाटीज़म का निशाना बन गए थे यह किस तरह क़बूल किया जा सकता है।

(उद्धरित मज़ामीन बशीर जिल्द 3 पृष्ठ 642 से 653 मज़ामीन 1959 ई)

आख़िर में ज़माने के हक्म और अदल के इस बारे में उपदेश पढ़ देता हूँ जो सब स्पष्टीकरणों और व्याख्याओं पर प्रभुत्तव वाले हैं।

एक आदमी ने आप की मज्लिस में सवाल किया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर काफ़िरों ने जो जादू किया था उस के बारे में आप का क्या ख़्याल है? हज़रत अक़दस ने फरमाया कि जादू भी शैतान की तरफ़ से होता है। रसूलों और नबियों की यह शान नहीं होती कि उन पर जादू का कुछ असर हो सके। बल्कि उनको देखकर जादू भाग जाता है जैसे कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है لَا یُفْلِحُ السَّاحِرُ حَیْثُ اَتٰی (ताहा:70) कि देखो हज़रत मूसा अलैहिस्सालम के मुक़ाबला पर जादू था आख़िर मूसा ग़ालिब हुआ कि नहीं? यह बात बिलकुल ग़लत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबला पर जादू ग़ालिब आ गया। हम इस को कभी नहीं मान सकते। आँख बंद कर के बुख़ारी और मुस्लिम को मानते जाना यह हमारे तरीका के ख़िलाफ़ है। यह तो अक़्ल भी स्वीकार नहीं कर सकती कि ऐसे आलीशान नबी पर जादू असर कर गया हो। ऐसी बातें कि इस जादू के प्रभाव से (अल्लाह की पनाह) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाफ़िज़ा जाता रहा ,यह हो गया और वह हो गया किसी अवस्था में ठीक नहीं हो सकतीं।

फिर आप फ़रमाते हैं कि मालूम होता है कि किसी ख़बीस आदमी ने अपनी तरफ़ से ऐसी बातें मिला दी हैं। यद्यपि हम सम्मान की दृष्टि से हदीसों को देखते हैं लेकिन जो हदीस क़ुरआन करीम के ख़िलाफ़ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान के ख़िलाफ़ हो उस को हम कब मान सकते हैं। उस वक़्त हदीसें जमा करने का वक़्त था। यद्यपि उन्होंने (अर्थात जो हदीसें जमा करने वालों ने) सोच समझ कर हदीसों को दर्ज किया था मगर पूरी एहतियात से काम नहीं ले सके। (बावजूद बड़ी एहतियातें करने के) वे जमा करने का वक़्त था लेकिन अब नज़र और ग़ौर करने का वक़्त है। देखो और ग़ौर करो। कोई हदीस क़ुरआन करीम या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान और पवित्रता से टकराती है तो वे रद्द करने के लायक़ है या उस की कुछ और व्याख्या है (जिस तरह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने की या हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने की।) फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि आसार-ए-नबी जमा करना बड़े सवाब का काम है। (नबियों की ज़िन्दगी के हालात जमा करना सवाब का काम है। उनकी बातें जमा करना सवाब का काम है) लेकिन यह नियम की बात है कि जमा करने वाले ख़ूब ग़ौर से काम नहीं ले सकते। अब हर एक का काम है कि ख़ूब ध्यान और फ़िक्र से काम ले। जो मानने वाली है वे माने और जो छोड़ने वाली हो वे छोड़ दे। ऐसी बात कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर (अल्लाह की पनाह) जादू का असर हो गया था इस से तो ईमान उठ जाता है। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है اِذْ یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (बनीइस्राईल:48) कि जब ज़ालिम लोग कहते हैं कि तुम केवल एक ऐसे शख़्स की पैरवी कर रहे हो जो जादू किया गया है। जिस पर जादू हुआ है। जादू के प्रभाव में है। ऐसी ऐसी बातें कहने वाले तो ज़ालिम हैं ना मुस्लमान। ये तो बे-ईमानों और ज़ालिमों का कथन है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर (अल्लाह की पनाह) जादू का असर हो गया था। इतना नहीं सोचते कि जब (अल्लाह की पनाह) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह हाल है तो फिर उम्मत का क्या ठिकाना? वह तो फिर ग़र्क़ ही हो गई। मालूम नहीं उन लोगों को क्या हो गया है कि जिस मासूम नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारे नबी शैतान से पाक समझते आए हैं ये उनकी शान में ऐसे ऐसे शब्द बोलते हैं।

(मलफ़ूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 471-472)

अलहमदु लिल्लाह कि हम ज़माने के इमाम को मान कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान तथा सम्मान को भी समझने वाले हैं, पहचानने वाले हैं।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ۔

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 22 मार्च और 29 मार्च 2019 पृष्ठ 13 से 17)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad